म्होयी

[राजस्थानी जन जीवन मांथै रंगीलो रोचक वीस वातां री
सोखो संकलन]

*

नानूराम संस्कर्ता

("कलायण" (राजस्थानी), "समय वायरो" (राजस्थानी) "दस देव" (राजस्थानी) "बटोही" (हिन्दी) "टाँडो" (नाटक सं०), "जागरण" (गीत)
आदि आखांरा रचयिता)

मोल ३॥)

आधुनिक प्रकाशन
माहेश्वरी प्रेस
स्टेशन रोड
बीकानेर

● प्रकाशक :—

नन्दकिशोर बिहानी, व्यवस्था सचिव, आधुनिक प्रकाशन, स्टेशन रोड, बीकानेर

● प्रथम संस्करण : १०००

● प्रकाशन काल : संवत २०१४ आखातीज

● मुद्रक : माहेश्वरी प्रेस स्टेशन रोड, बीकानेर

परिचय:—

श्री नान्नूराम जी संस्कर्ता

जन्म सं० १९७४

संस्कर्ताजी गांव कालू रा वासी है। अट्ठारै वरसां सूं राज रै मदरसां में टाबर भणावण रो काम करै है। आप हिन्दी अर राजस्थानी रा मानीजता कलाकार है।

आप लाम्बै कद गेहुंआं वरण सोणै चैरै अर मुलकते मुंढ़ रा मिनख है। आप री लेखनी सूं परकृति रा चितराम परकाजां री काणी अर हास्य रा फुंवारा सा बवै है।

आप कवि, लेखक अर काणीकार है। आधुनिक राजस्थानी री पैली पीढ़ी रा मेढ़ी है। सौ फोड़ा भुगत र ही आप री धुन में लिखता जावै है। औ है म्हांरा संस्कर्ताजी।

सम्पादक:—कर्मचारी संदेश, बीकानेर

वातां री विगत



प्रवेश

राजस्थान का साहित्य जहाँ विशाल, व्यापक व समृद्ध है; वहाँ नूतन साहित्य सर्जना, किसी प्रकार की बाहरी प्रेरणा के अभाव में भी, अविश्रान्त रूप से गतिशील है। ज्ञात-अज्ञात रूप में शतशः कलाकारों की नवोदित प्रतिभाएँ राजस्थानी साहित्य के भण्डार को भरने में लगी है, ऐसे ही साहित्य साधकों में राजस्थानी कविता को नया मोड़ देने वाले श्री नानूराम संस्कर्त्ता हैं, जिनकी 'कळायण' राजस्थानी भाषा के निसर्ग-काव्यों में यशस्वी कृति है।

श्री संस्कर्ता एक ओर कवि हैं तो दूसरी ओर कहानीकार भी। उनका 'ग्योथी' कहानी-सँग्रह उनके इस वार्त्ताकार के रूप को सामने लाता है। इन कहानियों में आपने राजस्थान के जीवन-पर गहरी सर्चलाइट डाली है, जिससे अँधकार में डूबे हमारे जीवन के बहुत से चित्र उभर आये हैं।

कहानियों में लोक-कथा का रस, आधुनिक युग की मनोवैज्ञानिक दृष्टि, एक चित्रकार की तूलिका का संस्पर्श और सुधारक की भावना का मेल है। भाषा अत्यन्त स्वाभाविक, सहज-सुगम, मुहाविरेदार और कवि की रसधार से आप्लावित है।

ये कथाएं जीवन में डूबकर लिखी गई हैं। राजस्थानी गद्य में यह नये मोड़ का संकेत है। मेरा विश्वास है, साहित्य प्रेमियों द्वारा यह रचना आहत होगी।

शिवरात्रि, २०१२

भारतीय विद्या मन्दिर,

बीकानेर (राजस्थान)

प्रधानाचार्य

अक्षयचन्द्र शर्मा

एम. ए., साहित्य रत्न

बातकी

मिनख सुभाव सूं ही बात प्रेमी रियो है। मिनख-जूणी सागै जूनी अर सदीनी बातां जुड़ी आई है। नानी-दादी री भाँत-भँतीली बातां अर चारण भाटां री रंग-रँगीली खुली -ख्यातां रो तो अठै अखूट खजानो है। जकां रां ढाढी-ढोली, जैन कथआवां, पंच-तंत्र अर हितोपदेस जिसा अमर ओखाणा रा ही ओठार ठाट है। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंस रै रळयोड़ा सब्दाँ री ओप ही राजस्थानी बातां री सांची साख है। मानखै रै सुख-दुख, राग-वैराग, रीत-रिवाज अर पूजा-पाठ में बातां रो ही वणाव है। घोड़ां नै घी अर ऊंटां नै चारो पण मरदां नै तो सदा सूं बातां रो ही मत्त जाणो।

आपणी बोली में हँसीली बातां री घणी काँयखा देखी। स्याणी हँसी रा कोकड़ तो कठै हीसैक लाधा ! जी बैलाव, आंट तीख अर सीख रो रळावढ़ो तेड़ो तो पड़ियो ही कठै हो। लोगां री आ ऊभी लालसार डैल डिगावण खातर ही 'म्होयी' री भेटीं जोड़ी है। इयै में विलाली, विदकी वीस बातां है। दो,

च्यार कारणां ता लोक कथावां रै रूप में ही चालै है। पण !
इणळ्यां रैं सागै भासा सोवणी अर मावरैदार कर दीनी है।
जकै सूं कथोपकथन रसीलो रैसी। कथावां री भासा जे दोरी अर
कोरी पावरी ही रैती तो वातां रो मजो कोम्फो अर किरकिरो हुय्यातो।

जुग रै मनोविज्ञान सारू रोचक वातां ही भावी टाबरां
नै बोली-चल्ला, विद्वान अर वीर बणा सकै। बालकां भौढ़ां रै
भणीजण वेगी इसो ही साहित देणो चाहिजै। जकै सूं वै:
कक्कै कोडकै रै सागै ऊथवै नही।

'म्होयी' नै कोई जैरी सांप जाणर परियां मती सरक
जाया। ओ तो अेक घणी खुसी री वेळां में बोलीजण हाळो
हंसी अर हरख भरयो हरफ है। ई सूं कोई चमक मती
भाज्या। भलां हीं म्यॉनो ले लिया। रोळ, रिगटोळी, टगी,
मुसकरी, मजाक, गप्प गुलछर्रा, गोधम, हंसी-ठठा, ठळा-ठठोळी,
टल्लग्गल्ल, मजा, रिगल, घाई, किलोळ, नुकल, चुहल, खिखि, औ:
बोळा ही 'म्होयी' रा अरथ तिथा बरोबरियां नांवटा है।
ठसकठोलिया, चिड़बोथिया, धूम-धड़ाका, भांड रा सा दांत,
वैरूपियै रा सा सांग, मोरां रै पांखीजणै, छत्तर करणै अर
सोंगटी आळ्याणै री कैवतां ई म्होयी रै ही बरताव में ली
जावै है। 'म्होयी' री बाण में आंवखियां आळा तमासां रा
पर्यायवाची म्है ऊपर चाड्या है। आगी हूंकारो दे दे सुणआंर गुणयां।

वडै बोल अर रोळ री रसीली बातां है। कदास थां बांचण हाळां रै दाय आ ज्यावै तो चोखो; नहीं जणां 'म्होयी' रा पग दाबै 'गीरबो' भळै आ रियो है। जको थांनै जरूर छिका-धपा देसी म्हैं इसी आसा नै राखूं।

काळू, बीकानेर
संवत् २०१३
आखातीज

थांरो सोखी
नानूराम संस्कर्ता

दूध गिलोड़ो

फाँस,फोड़ै अर तोड़ै रा किसाणी काया माथै जिता कोढ़ है: बित्ता ही वांरै खेतांरी भूंपड़ीर छानड़या आगै मौज-मजा नाचै है। किसाण उनाळै रै तावड़ामें, खेतां खड़ा काम सूं जूझै, साँसै सीळै पण ! मीठां मतीरां, कँवळां काकड़ियां अर दूधां सिट्टां रै चाव !

फूसो तावड़ियै में बूजी काढ़तो-काढ़तो विसांई लेवण नै भूंपड़ी आर चिलमड़ी भरतो जणा वाती में सूं पून रा लैरका बींरो जीसोरो कर देंता । ताप्योड़ै डील माथै पसेव रा चालता खाळा अर हाँफीज्योड़ै साँस नै भूँपड़ी री ठंडी पून टिका देंवती ही । काम री भूख माथै मिरचां रोटी रो मीठो दोपारो कर परो आड टेढ़ करतो, जद फूसै सूं कोई भी सुख अलगो नीं रैंतो

भूंपड़ी रै आणंद खातर फूसो दो कोस, जेठ रै तावड़ियै में काम करण नै जांवतो हो । बींनै भूंपड़ी सूं इतो मोह हुग्यो हो आखैदिन घरां आवड़तो ही नहीं ! जद कदे फोग बाढ़ण रै मिस, कदे बूजी काढ़ण रै मिस अर कणाहीं कूड़ी संभालन वेगी खेत में आपरोर अेकर भूंपड़ी में आडो हुणो ही पड़तो । समै जोग सूं वरसाळो आयो अर खेतां गाँव वस्यो ।

अवै खेत में राम विराज रियो है । गालै-गोटै, कूंकूं-दूधी

करी तो सगळां री हूण पुकारै है । कुळ रो काळ आ बैठ्यो है। आज अठै जीवण-जेवड़ी कोनी है । बेटा डर हाळी बात पूछणी चावै, पोता घणा घबड़ावै; पण ! डोकरो तो वेगो उचाळो घालण री उतावळ करै है। ईरै सिवा मूंडै सूं देई देवता रो नांव ही काढै नहीं।

डेरै आगै सगळै घर रा खड़ा देख्या तो आड़ोसी-पाड़ोसी ही अचंभो कर परा खनै आया। बोल्या बात के है? डोकरो भट बोल्यो ही— "दिन विसूंज्यो नी अर म्हारै कुळ री करळोपना हुई नीं ! कारी लागै तो लगावो। मिनख मिनख रो दारू हुया करै है। नहीं तो डूबग्या आज काळी धार ! डूबती न्याव नै कोई बंचावो ! हिन्दू री बेड़ी है, कोई तो दया करो।" आयोड़ा लोगां कियो— बात के है ? म्हारै समझ में ही कोनी आवै। फूसो बोल्यो— "फूटगी थांरै हियैरो। म्हांरै रात दिन रै ठाओलियै भूंपड़ी में आज दो मोटा मोटा सांप अर एक गोहीरो तीन वड़िया है । चालो, दिखाऊं लीकटी अर पग मंडियोड़ा ! भट फूसो बण्यो फौजरो सांभी ! अर टोळ रै आगी आगी चाल्यो भूंपड़ी कानी। बारणै सूं अळगो खड़ो ही वतावै सांपरा सैनाण अर कवै है— दो हा ओठी हाल मान मान ! एक रंगत पंछी अर दूजो कुम्भारो, तीजो खण गोहीरो। अबै गूदड़ गाभां रै नीचै वड़ग्या।

हमैं आयोड़ा मिनख ही चकराया ! क्यूं के मिनखांरो काम है

घर हाळा ही घबड़ाग्या अर पग छोड़ दीना, जणा दूजो इसी सलाह कुण देवै के अठै ही रैवो। पण छेकड़ करड़ी छाती कर परां आखा आयोड़ा पाड़ोसी बोल्या— सालभर री पचाई है अर सैकड़ी मण धान है। खेत छोडर जाणो आछो काम कोनी। डेरो बदळ लेवो, वासते जगावो अर पोरो देवो। एक आदमी गांव सूं बभूतै गोगैजी रा भोपा अर जोगी काळवेलिया ले आसी। जका भोपा आपरो धूपध्यान करसी अर काळवेलिया पूंगी वजासी। जकै सूं सांप वारै आ जासी अर गोहीरो जगां छोड़ जासी। दोनूं देवता आप आप री जेवड़ी सांवट लेसी अर खेतरो भो भाज जासी। जणा फूसो बोल्यो– रिपियातो सैकड़ी लाग जासी। भोपा आसी, दूध पीसी, ढोल वजासी, जागण देसी, पूजणी करसी, परसाद वांटसी अर सवासौ रिपिया कळस घलासी। कनफाड़ो जोगी काळवेलियो ही इक्यावन रिपिया अर पांचू पोसाग लियां विना काम झालै नीं; जकी सामी दीखै है। पण 'मरतो के न करतो' 'मरतो जैमत हँकारै' 'जांतै चोर हाळा झींटा है'। हजारां रिपियां रो धान छोड़णै सूं तो पांचसौ चारसौ लाग जावै तो ही चोखा। बूडो बोल्यो— मेलो गरभदास नै गांव! जको गुड़ गेहूँ अर घी खरीद ले आवै। आंतो भोपा तिथा काळवेलियां नै ही साई नूंतो दे आवै।

गरभदास लोभी सो स्यामी! मिनखां रै विचाळै आग्यो। कदेई वाडी आंगली पर नीं मूतै, पण आज तो नट नहीं

मृतभोज में वद‌ळग्यो । बोल्यो करावो क्रिया कर्म ! परलै कानी भळै गाभा नै टंटोळया तो जमीरै सारै, सींगां रै नीचै एक कँवळ धोळै सांप री सकल रो जिनावर दुब्यो दिख्यो। अबकै गरभदास रो ही काळज्यो हालग्यो ! हंसीरो रंग फीको पड़ग्यो । जाण्यो सांपां रा किसा सनेस ! अर सांपरै बच्चै रो के छोटो ? झिझक्यो अर झट हेलो मारयो ही— सांप जावै रे ! सांप जावै ! हरड़ देणी बैठा हा जिका सगळा लोग आप आपरी ऊंची उम्मीद नै भूल परा, झट भूंपड़ी रै बारणै आगै भाज्या आया। फूसो सगळां सूं पैली ढूक्यो ! जेई रै सींगां कानी देखर बोल्यो— अरे ! ओतो दूध गीळोडो है। आयोड़ा आखा मिनखां रै मूंढै माथै तोवो फिरग्यो ।



[२]

दौलक

(रात री वात)

बाळहठ आपरै नांव सूं ओळखीजै है। माईत भलांहीं कोडी री कंगाल हुवो अर भलांहीं मूसळ पर धजाळो करोड़पती सेठ! बालक तो आपरी मरजी मुताबक मांग माथै अड़तो ही रैसी। कितो ही ठगाओ, परचाओ अर डरावो पण बाळक आपरै हठ नै नीं छोड़ैस! नीं छोड़ै! कैई कुरदसिया माईत आपरै भोळै टाबरां री मांगनै जाणै ही कोयनी! बैः बावळा इसै एढां टाबरां नै ठोकणा पीटणा सरु कर देवै। जकां सूं वांरा टाबर कुलछणा, क्रोधी तथा कपूत हुवै! पण कैई स्याणां सरवजाण माईत बाळक जे हाथी मांगै तो हाथी ही खरीद ल्यावै अर जे भोलो टाबर हाथी रो पग कुलड़िये में घलावणो चावै तो तगारी में जरूर घाल नै राजी करै। इसा माईतां रा टाबर सदा फळै फूलै अर दुनियां में नांव नामून करै। बाकी रा कायर डांगरा हुवै। जका कुढ़ कुढ़ मरै नै रगड़ा भगड़ां सूं दूजा नै दुख देता जावै।

बनो आपरै बाप नै काको कैया करतो हो। बो काकै रै लाडेसर, हेजहिल्योड़ो बीचोटियो बेटो हो। बड़ी बड़ी आंख्यां नै चोड़ो बाटको सो मूंढ़ो अर मीयोड़ा मोती सा चिलकता दूधिया दांतां नै देख परार गळी बैंता भिनख ही एकर तो गोदी उठानै पछै आगी नै जाया करता। बोः बरस पांचेक रो हठी-हमीर, बरद वीर, चंचळ कान्ह-कुँवर सो कुळ चानणो करण हाळो बाळक हो। घर हाळा गिलारियां नै नानी अर कुतड़यां नै सासू री पदवी बीं बेगी दे राखी ही। बोः खेलदार ! गाणै-बजाणै रो इसो रसियो जाणै तानसेन तिथा वैजूबावळै रो ओतार है। ढोलक अर तबला बणा बजा घर री सगळी थाली वाळटी फोड़ नाखै। हरदम आंगळियां चालती हीं रैवै; जियां पाणी मैं मिछळियां ! बींरो काको बीनै होठ रो फटकारो ही नीं देतो अर तूंकारै सूं नहीं सदा थेकारै सूं बतळाया करतो हो बनजी, बनो, वोपारी, बनड़ो, कच्चू, पक्कू जिसा मोकळा लाडरा नाँवां सूं बुलावतो रिया करतो। जे कणाही बोः बनो मोटर, पेटी अर घड़ी री रट हठ करतो थको लगा देतो तो काकै रै जी नै घणो तसियो हुजांतो। छोटी मोटी, मोटर, पेटी अर घड़ी तो बींरै काकै बींनै सीकड़ूंन सीकड़ूं ल्या दीनी। पण ! बनो तो आपरै गाँव में चालण हाळी सर्विस मोटर जिसी तो सांचेली मोटर-लोरी अर मूणियै मिरासी हाळी सी बड़ी ढोलक पेटी तिथा टण टण बाजण हाळी मोटी दीवार घड़ी वेगी रोजीना रोया अराया करतो हो। पण, "घर में नहीं अखदरो बीज, बावू

खेलै आखातीज" "घर में कोनी तेल न ताई, राँड मरै गुल-गुलांई" करै तो काको के करै ? वस कोनी हालै।

आधी ढ़ळगी पण आज काकै री आँख्यां में वट नीं पड़ै। उन्नै फुरै है अर वुन्नै फुरै है; पण, नींद तो हराम हुरयी है। सागै सूतै वनै रै पेट माथै हाथ फेरतो काको घणी कांस कर रियो है। "आज वनड़ै मोटर लेवण रो डाढो हठ पकड़ियो,आखै दिन रूस्यो रियो, रोटी खाई न पाणी पीयो। रोंवतो रोंवतो भूखो ही सूतो है। पेट कुरळ! कुरळ! करै है। के कियो जावै ? टींगर रै जिद पकड़र रोवण हाळो वडो रोग है। कियां छुडावां ? कियां पढ़ावां ? सोच करतां करतां आखर काकै रै ही होस में रोस रमग्यो। ओथारो सो फिरग्यो अर सऊँ! सऊँ! खोलो सो सुंसांवण लागग्यो। नाक रा खरड़कां भरड़कां सूं खनै सूती वनै री माँ अर वडिया जाग उठी। धानरो वाळटो लियाँ बोली— दिराणी जेठाणी आवो आटो तो पीस लेवा। विछाई चाकी सारैं गूदड़ी अर दिया हाथै माथै हाथ।

तारियो उग्यो, भैंस्याँ ऊछरी अर काती सिनान री आरती वाजी। वनो काकै सागै सूतो जाग्यो अर आडै सूतै काकै री दौलक वणाई। पेट पीठ पर आँगळियां थिरकी, ताळ पड़ी अर मन मन में ही आपरी अलवेली परभाती गीरी। वनै री आंगळियां सूं काकै री काख नीचै, आंतड़ियां पर गिलगिली सी हुई। विचार संध्यो अर सक्कर नींद में भिजोक पड़ियो। चाकी री उवाज सागै होळै होळै वात करणै रा सपसपाट सुणीज्या। जद का दै लगाया कान चाकी

थे आखा साळ में बड़िया बैठा हो। माउ नै लेर आवो सै बारैं एक नूंई बात बताऊं"। इत्ती सुणतां ही सगळा जणा बारैं आ जावै है। जणा काको आपरी मां नै कवै है के—"रात माऊ थारी चुलगी हुवै ही। बनै री मां अर बडी मां चाकी पीसती थांरी भूंडी भूंडी वातां करै ही। म्हैं बोलै बोलै बोळी ताळ ताईं सुणी। बींयां दोनां जाण्यो मांचै माथै बनो अकलो ही सूतो है। बींयां नै केठा म्हैं उमर क्यांमें खोई है। छोटी ओसथ्या में तो कडूंबै हाळा, भाठाभिड़ावणियो, सिर फुड़ावणियो अर नारद कैया करता हा। पण सांची कह्वे बिना तो ओजूं ही नीं रियो जावै। रात रात म्हारै पेट में सुणी बात समा रेवै तो दिनूंगै नै आफर ढोल हुजाऊं। अबै म्हैं रात री सुणी चुगली सुणावण वेगी ही माऊ अर थां सगळा नै बारै बुलाया है। बोल्यो—(मां सूं) बनै री बडी मां थानै कैवै ही "बूढ़ली रांड मरै कोनी ! मर जावै तो सवा रिपियै री कड़ाई करदेऊं। कद मरै अर लारो छूटै ? मरसी जकै दिन सुख होसी। डाकण रा सा डोळा काढती ही रैवै है। सगळा नै तो खायगी, म्हानै और खासीक ठा कोनी। कोई मार देवै तो"..........

हाथी सूंड री, बिच्छू कांटै री अर सासू आपरै जस री घणी आसा रुखाळी राख्या करै। बांरै ऊपर जे कोई ताव ल्यावै तो बो खारो बाप रो सो मारणियो लागै। सैयोनीं जावै। मां री

आंख्यां तणगी होठ हालग्या अर दांत भिड़ग्या। बोली—"मरो रांडा रा माईत। म्हैं क्यूं मरूं? मोटियार तो थे जके मरे समान अर रांडां ऊपर चढ़गी। नूं जिताही कोनीं गिणै। थांरै तो नाका में नाथ घाल राखी है। लावो गुदा पकड़र म्हारै खनै, थोड़ी भारखी उतारूं! बनियैं री मां पर थोड़ो भरोसो करियो हो, बोंरै ही आजकळै सक्खण चढ़गी दीखै है। सेर री हांडी ही सुवा सेर उर दीनो, फाटे नीं कठेसूं रैवै। जात माने पगे पड़ैं; कुजात माने सिर चढ़ै। पुरियै विना घसको कठै पड़ियो हो। माईत तो वैः जको बेचर खाग्या। नाळो मोळै तांई रा लेलिया अर ओजूं संभाळी ही कोनी। ई घर में लाधी सून जको मींढै री मां भेड वणगी। आई छाः नै; हूं बैठी घररी धिराणी! छोरो ल्यावो रे बुलार नागड़ती (बनैरी मां) नै थोड़ी नानी करूं"।

पोटा नाखण दो! मोड़ो हुग्यो! स्याणां देवर हो नीं! थांरी मांनै हेलो मारूं हूं। थांरै तो कीं काम कोनी, खेलण पर ही हो। मनैं खेत जाणो है नीं! रामो बोल्यो माऊ अवार ही बुलावै है तनैं। कूड़ कोनीं बोलूं। चाल पोटा पछै नाखी। इतै नै ही तो बूढ़ी मां सामी आ जावै है अर कवै है नागड़ती गोलां री जाई, हूं क्यूं मरूं अे? मरो थांरा माईत! जकां थांनै जांई भगतणां नै। कड़कस्या मुणस मरावणी! रांडां रो खावण वेगी गोघो वळै है। ले तनै तो थोड़ो पुरसूं"। पोटा चुगती ओकड़ बनैरी मां माथै डोकरी लातां री लापसी,

धूथां रो घी घालणो करियो सरु अर बीच बीच में चूंठियां रो चूरमो ही चखावती जावै है। बूढळी सागीड़ो गोघळो करियो, चूंडो हाथ में पकड़ियो अर टिप्पा दियां सगळां रै बीच में लाई है। जद बनै रो काको बनै री मां नै कवै है — "सुवाद हैक? सूधी तो छिपकली हुवै पण असंखे जी गिटै। जणा तो चुगली बेगी मूंढो बळियो! बूढी सासू, मां री जगां, जकां रो हीड़ो चाकरी तो पड़ियो कुवै में; उळटी लुक लुक गाळां काढणी। जींवती रो ही माण मारणो! ओजूं तो गांव री लुगायां ही म्हारी मां सूं डरती रै वै है। थे घर हाळी ही टीकली - फातली कर मरणनै अ■को"। बनैरी मां बोली — कणां चुगली करी ही ओ? कूड़ा क्यूं बोलो? थांनै तो खोयी करियां बिना आवड़ै कोनी। बाईजी री मां अै तो (आपरै पतिवगी) सफा कूड़ा कुचमाधी है। टींगरां में रैवै टींगरां री सी अकल; इकळग टींगरां दांई ही चिड़बोथिया करै है। कूड़ी सांची करे बिना रोटी पचै कोनी। थां कनैसूं लड़ावण नै करै है। के हाथ आवै है ठा कोनी? इतो कै: परो बनै री मां भूं! भूं! रोवण लागगी। सागै सागै बाळक रामू रै ही आंख्यां में आंसू आग्या। छोटी बहुवां से बांठां पग देगी। हथाई खिंडगी।

जीम जूठ नै कैई जणा खेत गिया, कैई गुवाळिया अर कैई टाबर टीकर खेलण लाग्या। बनै रो काको आपरै घरू मदरसै में भणावण नै गियो अर बूढी डोकरी रोटी खापरी लासी खूंटी

तांणी । वनै री मां अर वडिया जीमण वैठी । बडिया रोटी हाथ में उठाई ही ही, इतैनै वनै री मां किवाड़ रै ओलै झीणै झोलै सूं मूंढो काढ नै बोली के—"रात री बात रो बाईजी री माँ नै सो ठा पड़ग्यो है"। इतो सुणते ही बडिया रै सैकारो सो निकळग्यो, सूनी सी हुगी अर पड़गी हाथ सूं रोटी ; बोली जणा तो खोटी हुई ।



[३]

रोही रो रींछ

चौधरण बोली—"के दुआयती ल्यो हो ? कर दोनीं एक रा तो दूसरावै रा हाथ पीळा ! तीन दिनां सूं परसंगी बैठा खोटी हुवै अर गाँवरा लोग हँस हँस वातां बणावै है। 'कवै है बापड़ा भागी है। ब्याह नै ही नटै है। नहीं तो बाँवतो अर विहाँवतो कुण पिछताया करै है। सै काम राँड लिछमड़ी रा है। घर में दो हजार लरड़, वरस में दो विरियाँ ब्याजावै; बारै भीणा सूं डरणियां बकरिया सागै रळ ज्यावै साल में दो लाण ऊतरै। जके ऊन रा ऐःभाव, भेड हाळां री अर ढेड हाळां री आजकळै चळ्योड़ी है। इसी इसी वातां म्हारै कनै आवै जणा म्हारो तो लोही बळ ज्यावै। माँडदो हणाईं कातीक मिगसर रा फेरा ! वडोड़ो छोरो परणीजसी तो चोखी वात, नीं जणा छोटियै नै गरणगटा कर लेस्यां ! बाप हूर बेटै रा ब्याह वेगी नोरा काढो, के आछा लागो हो ? मुळक में मैणो लागैलो भलोक" ?

बसतोजी चौधरी वरस पचासेक रो वडो बूढो, पीळा सा दांत नैं करड़-कावरी लटारा सी दाड़ी; सोनै री दोलड़ी वीरबळी जकां में लाल डोरा पोया नै काना रै वारकर वांध्योड़ी। सागै दाड़ी री लटां रा आंटां ! गोडां सूणी धोती, मुलमुल री पाग अर ऊँटिया कोरियोड़ी गटाळी धोळी अंगरखी। दीखत में तो देवता सो दीखै पण कोरो धन रो धायोड़ो ढींग । मता रै मोद साग अकल रो ही कोड राखै, नै मुळक मुळक घर हाळी सूं घर में वैठो वातां करै है। कवै है— "परसंग्यां नै वैठाण कैण राख्या है ? आप री गरज धरणो दे राख्यो है । चार सौ वीघां री लीली भोर खेती, धान रा भरियोड़ा कोठा अर गायां भैंस्यां ऊँटा रा टोळा नै वाग सा उछरता देख्या जणा वापडां रो जी चालग्यो । जींवती जड़ नै सगळा चावै हैं । आपरी वेटी रै सुख वेगी वैठा है । पको वर अर जोड़ीरो वर दाय आयग्यो, जणा कठै जावै ? नहीं जणा छोरा गांव में और घणा ही है । पण वापड़ा नै कुण पूछै ! कोंरै ही टकैरी पैदा कोयनी। घणाखरा तो गंडक जिती भूख काढै । फोड़ां री मेधा कोयनी । मोकळा ही वार वारला दूजा टाबर दिखाल्या । पण ! आंपरळै वडोड़ै छोरै खेरतियै वेगी ही अड़िया वैठा है । पण ! खेरतियो कवै है— मरूं न मारूं, व्याह करूं ही नहीं ! छोटियो छोरो दस वरस रो अर आंरी वेटी पन्दरै वरसरी ! इसो भैंस वाछड़ियै रो जोड़ो करां ही किंयां ? छोर्‌यां रो के घाटो मारग्यो । सेर सेर गोवर घणो ही लाधै है । वारवारला नोरा काढै है।

जद ही ओ साख करां तो खेरतियै हूँ ही करां । पण ! थूं स्याणी है, काई अटकळ बता जकै सूं खेरतियो ब्याह री हंकारो भर लेवै । आपणै हीं 'घर आये नाग न पूजिये, बांबी पूजण जाय' वाळी कैबत सांची नीं हुवै" ।

हुई बूझ ! चौधरण, फूलर ढोल हुगी; दुहण नै बलायोड़ी खोल हुगी । बोली— म्हांनै केठा ! अकल रा उजीर तो थे हुरिया हो । है तो थांरो ही जायोड़ोक ? कदेही मानीहीक म्हारी वात ? इमैं जावक अड़ेगी जणा बूजण बैठ्या हो । थांरै लखणां लारी जाऊं जद तो बताऊं ज्यूं ही बताऊं ! पण ! बताऊं हूं के छोरै नै मघजी ठाकर खनै सूं समझै है तो समझावो; नहीं जणा बां सूं डरावो धमकावो ।

चौधरी जाणियो वात तो चोखी है । हुगी आतो आटै री सी कोथळी खाली । अबै आपां नै ही रोटिया पो लेणा चाहिजै । मूंछ तो मरदां री ही ऊंची रैणी है । बोल्यो— ठाकरां रो राज गयो सागै सागै डर ही गयो । मेरो छोरो खेरतियो दो हजार भेडां पर राज करै है । बींरै रीस रो के छेड़ो ? नौकरी थोड़ी ही करै है । चढ़ती जुवानी, हाथ में आंटो गेड, खेंचर इसी मारै जको उछाळ देवै । चारूं पग ऊपर नै हुंता ही दीखै । भेडां रै खून में किस्यो गांव ललाम हुवै है ? गुलखीर खावै र, खोड़ में खुलो फिरै है । मिनख रो मूं को देखैनी । अलगूंजां री अलबेली तान उडावै है । ठाकर ठूकर सार बो कीं जाणै नीं । समझायो

कीं समझै नीं । मेरै तो जंचै है किसनोजी पंच अवार आपणी चौकी पर बैठा होको पीवै है । वांनै घर में बलार आपां दोनूं कैवां तो वै: अवस छोरै नै कानून रै जोर सूं समझा देवै तो आपणी वात रैवै, नहीं जणा इजत जावैली । चौधरण जाण्यो म्हारी वात तो नाखी, पण । लागै तो राखी' खैर !

किसनोजी अेक हेलै रै सागै ही घर में आयो । खंखारो करियो, पगरखी खोली, होळै होळै पग मेल्या अर वतळाया । बोल्यो— 'के कैवै हा' ? चौधरण लाम्बो गूंघटो काढ नै दूध री थाळी आगै मेल, पीढो ढाळ परी बोली— "परसंग्यां ऊपर बैठो वात के है थांरो सगो स्याणा तो घणा ही है; पण हाथ रा पोला अर आळा घणा जकै सूं घर रो कोई हो काम सूधरै नहीं । थे जाणो ही हो कै लोगांरै माईतां नैं तो फूठरा घी रा सीरा कराया अर आपरै बाप नै टक्के सर री मिरकलीर लापसी हुई । लोगां रै टाबरां नै तो सीख देता फिरै; अर घर हाळा नै लाड ही लाड में सफा बिगाड़ राख्या है । सगाई हाळा तो कूंळो ही कोनी छोडै अर खेतरियो नटियो खड़ो है । आबा गया नैं खीचड़ो घालती घालती अधमरी हुगी । साराळो तो दूजो चोंपियै जित्तो ही आदमी कोनी । कोई छोटी मोटी आ जावै तो देख देखर ही दस बरस काढ़ देऊं नीं, जणा सगा ! सांसां रो के विसवास है ? ...." बीच में ही वात बोट र किसनोजी बोल्या— "दिन तो थोड़ा ही है, पण ! लाठी

झलाया एवड़ में जाऊं अर खेरतू नै व्याहवेगी त्यार कर ल्याऊं।
एवड़ आज म्हारळै खेत खानीं उझरियो दीसै"।

सूरज मां रै घरां पूगै है, अेवड़ ओलै लगै है अर ऊँचै धोरै जगरो जगै है। खेरतियै रै छोटियै भाई खीर खातर तबलो धोयो है, खेरतियो कुतां री खिलारी में खोयो है, जद एवड़ किसनै जी रै पाक्योड़ै खेत नै जोयो है। किसनैजी एवड़ चमकाय खेत में उळझाय नै दूंकणो सरू करियो है। खेरतियै एवड़ री टोकरी अर किसनै जी री गाळ खेत में गूंजती सुणी तो ताव सो चढग्यो, माईत सा मरग्या अर कान खूसर हाथ में आग्या। आपरै छोटियै भाई नै बोल्यो— छोरा! भुगानिया आज मरग्या! पंचरै खेत मे एवड़ वड़ग्यो। हथकड़ी घला देसी, जुरवानो भुगता देसी अर मानखो ले लेसी। पण, तूं बैठो रयी। हूँ जाऊं हूं अर हाथाजोड़ी करूँ हूँ।

पोतियो मेल दियो, तिणो लेलियो अर गोरती गाय बणग्यो। पण! किसनैजी तो आंतै ही लाठी री दो सचका ही दी। अर बोल्यो— "बेटा भागवानी में टोरा मारैहै; माया में आंधा हुया फिरै है अर लोगां रा खेत खुवावै है। कोई मिल्यो कोनी सेर नै दो सेर! ऊपरलो उसताद! टरड़ियां नै ताजा करै है जका लेवै लगा देसूं। लखपती रा बच्चा। भाई गिणैन परसंगी! मां गि रै बाप! टीका टाळता फिरै है"।

खेरतियै दो सू ही सरतो देखर आंख्यां खोली; पग कड़िया अर बोल्यो— "थे माईत हो! मारोर चायै छोडो। पण अबको तो गुनो बखसो। ऊमर में गुण कोनी भूलूं। थे कैस्यो जियां कर लेसूं, भरास्यो जिता पांवडा भरसूं पण आज तो माफी देवो"। किसनैजी कियो— "व्याह कर लेसी"! बोल्यो "कर लेस्यूं" किसनोजी बोल्यो— "परणीजै जठै तांई बोलै कोनीक"? कियो— "कोनी बोलूं"। "तो चाल गांव। अबड़ै में म्हारो भाई खेत सूं आ जासी। हेलो मारूं हूं; थूं थारै भाईनै कइया। किसनोजी कवै है"।

वसतोजी ले किसनैजी नै सागैर गयो सराफां में बीकानेर। कड़यां रै मोटी न्योळी, काख में धोतियो अर पूठगंठड़ी में चांदी रो पावरो बांधे बडै बजार में फिरतो फिरै हो। सुनारां देख्यो भागी जाट तो मोकळा ही हुग्या लारी। बोल्या के घड़ावो हो! वसतैजी कियो— सौहेक भरी सोनो अर हजारहेक भरी चांदी कुटावणी है सुणतां ही सुनारां रै लागी दाह! कोई आंटाळी जळेबी ल्यावै अर वसतैजी नै दोफारो करावै। कोई चुरट सिलगार वसतैजी नै पावै। कोई आपरै घरां ले जावण वैगी ताफड़ा तोड़ै अर कोई खेलो दिखावण रै मिस भोळै जाट नै उडावणो चावै है। पण वसतोजी तो कवै है— किसनैजी रै जचै जिकां सूं गैणो घड़ावो। म्हारै तो व्याह रा वेगरणी अै ही है। खेत में जिनावर वड़ै गुवाळियो

कायल हुवै, धपाऊ री जळेबी सूं जूड़-जाट जजमै अर घणो स्याणो पंच सुनारां री गपां में ठगीज्या करै है।

चावळ सीजै है, गुड़ बंटीजै है अर ढाढी ढोली ओळंग रिया है। बायां बेल्यां आवला चावला करै है, बैन भूवा गीत गीरै है, अर भाईड़ां री गायड़ घूम रही है। आज मां रै मन में घणो हरख कोड लाग रियो है। बाः रिपिया उवारसी बोबो देसी अर थापी लगार आंटीले बेटै नै परणीजण नै विदा करसी। आज कोड में जमी पर पग नीं टिकै है। चांरां कानी लीप्यै पोत्यै घर में भायां परसंग्यां री कतार देवता री सी सभा जुड़ रयी है। थाली में चाँदी वरसै, गाँव रा साधी साईना बीन सूं गाभो बदळ नै (धर्म भाई वणणै) तरसै तिथा भातवी चौधरण नै ओढ़णा ओढावण हरसै है। चौधरी रै भायां रा कामळ खेसलांसूं मोढा टूटै है। इण धूमधड़ाकै नै देखर खेरतियो मन में जाणै है के—एः सगळा खेला तनै फॅसावण वेगी हुवै है! किसनो जी भूल्यो कोनी! कठै एवड़? कठै हूँ? कठै खीर आळो तबलो? कैयो जिया करियो, घरै आयो अर दस दिन होया एवड़ सूं अळगो बैठो हूँ। पण! हथकड़ी घलावण हाळी मनस्या जी मैं सूं नीसरी नीं दीसै है। "कोनी पैरूं" कै परो खेरतियो आयोड़ै वागैर गेणै नै हथकड़ी जाणर वगा देवै है।

किसनोजी लाठी लियां आवै है, वीन वणा देवै है अर फूटरी

जान चढा परी सागै आप ही चढ जावै है। आगै जान रो डेरो लाग जावै है, परसंगी भाज्या फिरै है। किसनेजी सिनान पाणी कर पैली पोन ऊजळा गाभा पैर दाड़ी रै ज ड़ियो लगा नै हाथ लाठी लियां वीनराजा नै कूणै में पिठाय समझावै है। कैवै है— जे, कदास तीन दिनां में अठै तूं बोलग्यो तो पाछो गांव नहीं लेजांवांला। अठै राज रो एक चमचेड़ा सूं भरियोड़ो बुरज है। जकां में जांवता जेल कर जावांला। खेत खुवावणो सोरो ही कोनी है। अबै जे तूं ईं केद सूं छूटणो चावै, गांव जावणो अर एवड़ चरावणो भावै तो मूंढो भींच नै आडो एक हाथ सूं पोतियै रो पल्लो दियां राख। भूख तिस सै: ! नहीं तो "वैही घोड़ा अर वैही मैदान"। किसनैजी सतगंठी लठ्ठ रै चिमटी लगाई अर कर आंख लालर दी जोर री दवड़क, वीनराजा मूंढ़ै आडो पल्लो ले लियो। कूड़े ही आंख मींच नै सोग्या। मेंढाळा चीणी चावळ जिमावण नै आया, सगळां नै जिमाया, नोरा काढिया पण ! कैंता गया के वीनराजा तो दंतराया ही कोनी।

सासू नाक खेंच्यो, दही दियो, काजळ घाल्यो अर छोरिया गावरड़ी सूं चींस नै पंखा साळ में लेगई। बाळक साळा सागै बैठाण्या, चूरमो आगी मेल्यो अर बोली वीन राजा जी माँ चेतै आगई के? जीमो तो सरी ! पण वीन राना तो गबूराजा जियां बैठा थर थर काँपै है। चोसरा पड़ै है अर मिनखाँ रै हलनलै में डरतै रो जी जावै है। करै तो गाँव में के करै? रोही हुवै तो एकलो ही हाथ दिखाळै। पण!

आयो हो, एक बाळटी तो ओजूं छली पड़ी दीखै ही । कागला पीयै हा वाभख हुवै ही । दस बजगी अबै बा: के काम आसी ? बापड़ा मासठरां नै पुगादेयो मदरसै में ! बां: के मोरड़ी रै भाठो मारियो है । ईंयां ही ढोळस्या; कीं अरथ तो लागै ! आपणा टाबर भणावै, आस राखै है, सूं सीठो तो बै ही कर लेवै । खरच तो लाग ही गयो, आगै सारू निगै राखर करिया" ! बेटै सिर हलार हँकारो करियो अर टाबरां नै हेलो मारियो ।

'क्यूं भाई जी के कैवै हा' ? छोरा बोल्या । बोल्यो—लाडी' थाँ रै मासठरां नै दिनूंगाळी ठंढाई तो पा आवो । बंगलै में एक बाळटी भरी पड़ी है । कोई ईंयां ही ढोळ देसी' । "हाँ" कै परार टाबर सोथाबरा भूखा भाज्या ही; गया सीधा बंगलै अर उठाई ठंडाई हाळी बाळटी ! आ: ठंडाई नहीं ताताई है । माण नहीं अपमाण है । आखै साल रै छींदै पतळै कास नै धूड़ में रळावण हाळो गंदो पाणी है । पाणी ही नहीं जैर है । जकां नै पीयां पायां पाणी ऊतरै है । पण सेठांरा टाबर ही तो ठैरिया; बानै के ठा राजी हुसी क नाराजी ! भट जाय नै मेल्यो हैड मासठर जी रै दफ्तर में ठंडाई हाळो बाळटो ! अर परणाम! प्रणाम ! पणाम ! सगळां रै कैणै रो सरू पोत सागै हुयो । हैड मासटर जी बोल्या—"छोराँ के है रे ? बाळटी क्यां री ल्याया हो" ? बोल्या "मासठर जी म्हारै बनेई जी आयोड़ा है, जकांरी खुसी में आखा अफसरां नै दिनूंगै ठंडाई री पाळटी दीनी ही ! थांरै बेई बापू जी बोल्या—" मासठरां रै इम्हितानां रा दिन है । बानै अठै फोड़ा

घालर कै करस्या ? वठे ही पुगा देस्या ! जणा म्हे थां नै पांवणा ल्याया हां। मासटर जी पूरा बोल ही नीं सक्या ! सिर हिला दियो अर हाथ रो इसारो कर दियो ! कियो 'ले जाओ' इत्तैनै छोटियो टाबर बोल्यो ही- 'मासटर जी उबरगी ही, जद थांनै पांवणा ल्याया हां थांनै पीवणीं ही पड़सी' 'अरे जावो ! ले जावो' हैड मासटर जी आडी आडी आँख्या काढी अर तड़कर उत्तर दीनो ! वांरा होठ हालग्या, जवाड़ी चालगी अर मूंछां फरकण लागगी। रीस में आपो भूलग्या ।. जाणै बाणियां मास्टरां री इज्जत इत्ती ही समझै है ! वै मास्टर जका जज, वकील, नीतिवाण नेता राष्ट्रपति जिसा वरतण बणावणिया पोंच्योड़ा पिंडत कुमार है। वांरी इत्ती ही कदर करै है। "सुगना ! ओ सुगना !" हैड मास्टर जी चपड़ासी नै वलावै है अर इम्हितांना री सला सूत करणै खातर, दो वज्यां मास्टरां री ओक सिटिंग राखै है। कवै है जा ईं कागद माथै सगळा मास्टरां रा दसतखत करवायल्या ; पछै छुट्टी री घंटी वजा देई" !

सासरै सूं खाली आवतो जुवाई, परीक्षा नतीजै में फैल हुयोड़ो टाबर अर उळटै आखर हाळै दिन फाटकियै रा, घरां जांवतां पग पाछा पड़िया करै है। जियाही आज ठंडाई पाछी ले जांता टाबर हिचकिचावै है। वै आपरै बाप रा सुभाव जाणै हा ही मदरसै री रिवाज सूं ही अजाण कोनी हा। 'जाण्यो पैल्यां तो बापूजी म्हानै गाळ काढसी अर पछै मास्टर जी नै ! मास्टर जी

उथळो देणै पर हक रा आंक ही मस्सा देवां । पण ! वाणियां रै सूगलै अर गिंजै टींगर नै धिंगाणै ही पास करणों चावां। आपां नै ओः भेद-भाव नीं राखणो चाहिजै । आपणै सै एक जिसा है। ईं परीक्षा में तो टाबर हुवै बिसा ही राखो । नींव मजबूत करो । ऊंचा चढावण सूं लाभ कोनी । गूँगा माईत धिंगाणै पास कराणा चावै । सरबजाण तो फैल नै ही पास गिणै ! अबकै गरीब अर अमीर एक सा वरतो, बतावै जिसा ही आंक देवो। नतीजो नीति-पुराण ही राखणों चोखो है । हूँ भळै, के कहूं ? थे सै खुद समझदार जिम्मेदार मास्टर हो । जगती थोड़ां रै भावी सवारां नै लगाम झालणी सिखावणियां सेनापति मुरसद हो, थे ही थांरै जंचै जिसी को" । हैडमास्टरजी रो वखाण पूरो हुयो आजरी माड़ी मास्ठरी सूं सै सरसीज्या नै रंगीज्या । ईं विसय माथै थोड़ा थोड़ा सगळा बोल्या ! सभा खिंडी अर परीक्षा मंडी ।

पराईभेट पढावणियां मास्टरां री अबै दोगली आंख्यां ऊघड़ी, दिन ऊग्यो अर चेतो करियो । सभा में तो जोस भरीजर एक मत हुग्या पण अबै बांनै पराईभेट हाळा गिंजिया अर सूगलिया टींगर चेतै आया । काळज्यो कांपण लागग्यो । जाण्यो कदेही एक आंक नीं भणायो, चोखा पीसा मारिया अर घणै माण सूं दूध चाय चढ़ाया । अबै वैः मजा नासां माखर निसर सी । छोरा फैल हुया नीं, अर मानखो गयोनी ! जे हुवै तो परीक्षा सूं पैली ही हैडमास्टर अर ट्यूसन बारोड़ां मास्टरां

रै विरोध में वाणियां रा कान भरणा सरु करो । भंडसी तो रंडी भंडसी, बावोजी तो सिध रा सिध रैसी । दोनां हाथां में लाडू रैसी । लाग्या टांग पाचियार भिड़ावण ने

"छोरा फेल हुग्या अबै मास्टरां नै मजो चखा देणो चाहिजै । लाग जासी हजार पांच सौ ! म्हे जाणस्यां एक मीणो घरां ही बैठा हा । पण वांनै तो सदा वेगी घरां बैठाण देस्यां ! गुमासताजी भरो घी रा पीपा, जावां जैपर अर आं मासठरियां रो किस्रो काटर आवां" । सेठजी घर आगै ऊभा धुधी घालरिया है, थूक उछाळै है अर जोर जोर सूं वकै है । नांव तो आंरो गोपालचंदजी है पण वार गांवरा लोग गोपू गोळछै रै नांवै सूं ही वतळाया करै है । वरस तो पूरा साठ गिटग्या पण कड़क में जुवानां सूं आगैं काढै है । लारलै साल लुगाई चली ही जद व्याह वेगी हजारां रिपिया खो दीना । वेटा वेटी अर दोहिता दोहिती आगैं, वीन वणनै त्यार हुग्या हा । छेकड़ लोगां माथै में धूड़ नाखी जद रिया । पण आपरी छैलाई नै नहीं छोडै । सिर माथै टेढी केसरिया पाग, नीचै बुंगला छांटियोड़ा बीज बीज जिता काळा धोळा वाळ अर आंगळी में चांदी री वींटी है । आज जोर जोर सूं हूंकै है अर दांत कुचरणी सूं चिगळयोड़ा चीकणा किरचा काढ काढ नीचा नाखै है । कदेही जुवानी में तो वड़ा सोखीन हुंता हा । ओजूं ही ऊजळा फ्ल्ट, फवती पोसाग में आंटीला ग्रामपंच वाजै है । हूंती

पढो"। हैडमास्टरजी सेठां रा बांः टाबरा नै आज पैलै परभात ही उणमणा अर उदास देख्या, मन रा भाव ताड़िया अर टाबरां री एक सभा करी। बाल-सभा, पोथी खानो, खेल अर दरजांरा चुनाव करणा पळाया। जकां में गाँव रै सेठां रा बांः बेटां मां सूं ही सगळा पदां माथै आया। वैः एक जात रा वडा वडा दो साला टाबर ही मानीटर, कैपटिन, सभापति अर मंत्री बण्यां। बां सूं ही मदरसै री नूंई व्यवस्था सरु हुई। आज आखै टाबरां नै नो वजे कलेवै री आधी छुट्टी लागी। पण! बां पांचां सातां लड़कां नै मास्टरां आपरी सभा में ही सागै रळाया। चपड़ासी गिलासांर पलेटां भर भर ल्यायो। मास्टरां रै सागै बां टाबरां ही जुगती सूं 'जळपान' करियो। गूंदरी चक्की अर विदामां रा गोटा सूं सै तिरपत हुग्या। टाबरां रो भो भाज्यो अर वडा पणै रो सिद्धान्त सीख्यो।



[५]

फोगसीं रो न्याव

जाट रै फवतै जवाब, भाट रै फिरतै नूंतै अर रावळियै रासधारी री नुकल वेगी कीं रा कान नीं मँडै ? इण रो कैणो सुणनै खातर वूढा वडेरा मैणो खावै, लुगाया गैणो गुमावै अर टाबरिया ही मुळकता हँसता सगळा सूं आगी पैंणो लियां चावै है। आं: आखा में जाट रो हाजर जबाब पैलड़ां बरतारां में राजा पातसावां सागै घणो नामजादीक हुयो है। जाट री बोली सूं उळझियोडी गांठां खोलीजी है। जाट री कैही जेई सूं धरती री धूड़ तोलीजी है। बीं रा जबाब आज घर घर में वॉचै है, मिनखां रै मूंढै मूंढै नाचै है। जबाव रै तरियां ही जाट फोगसी रै न्याव री काणी घणी फैल रयी है। फोगसीं रो न्याव अर वीरबल रो पड़ उथळो कीं सूं छानो है ? गाँवां में वूढ़ा वडेरा धूंयां माथै हथाई करता होका पीयै

अडीक में भींतां सारै खड़ा होळै होळै बोलै है, कानां में मूं दे दे वातां करै है अर जाळी झरोखां मांखर झांकै है। राज रा सगळा लोग आखी रात आंख्यां मांखर काढता थका राजा जी री मंगळ कामना करै है। कवै है —"हे भगवान म्हारै हिन्दवांणै सूरज, गऊ बामण रै रखवाळै, गरीब रै बेली, माराजा रै करट ! बादळ वेगा दूर करो"! मोटियारां अर लुगांयां में एक ही वात ! सगळां रै मूंढै सूं मंगळ मनावणा; सगळां रै हाथां अर माथां सूं भगवान नै एक ही अरज ! मैल मलियाँ नै मिनखां सू अर अळिया आळमारियां नै ओखदां सूं अजीरण हुरियो है। भीड़ भड़ाकै री जाग में रात जावै है, भाग सूं ऊजळो परभात आवै है। पीळो बादळ हुवै है, कागला बोलै है। पण ! राजा जी रो पेट बिंयां ही दुखै है। राज पोळ रै आगै सुख साता पूछण नै परजा रो मेळोसो लाग रियो है। मोती तोलीज रिया है; धरम पुन्य बोलीज रिया है। जपिया जाप करै है माळा फेरणियां माळा फेरै है। पीड़ा रै सोच सागै भरोसै रो राग रंग लाग रियो है। इसै ओसर माथै राजा जी थोड़ा जपै है। राणियां अर राज कंवरा नै थावस आवै है। रसोवड़ां रो हुकम हुवै है, पांत जीमण नै बैठै है।

राज पोसाक भूल्या; सादो कोट अड़ायो अर सीस उघाड़े ही राज दरबार में पधारिया। दरबारियां खमा करी, सभासदां जै बोली, राजा जी जाय ने ऊंचै मूढै माथै विराज्या।

आज पीळोड़ै चैरै पर मुरदनी सी छा रयी है। माथै रा वाळ विखर रिया है। पेट री पीड़ सोरी थोड़ी है ? जीवड़ै पर भार सो आरियो है, हिवड़ै सूं सांस दोरो दोरो आवै है। माथो भूंवै है जका सूं राजाजी मुढ़ै री वीळ माथै सीस लटकायां वैठा है। जाणै छैः मीणा री जैसत सूं उठ परा जीवण पायो है। मुंसी मल्ला कागज उळटै है, खजांची खजानो गिणै है अर गुमास्ता कानां माथै कलम टांगे वैठा खुसी री वातां करै है। कैई नारायण री दया वतावै है, कैई माळक री मैर रो गुणगान करै है अर कैई परजा री तीखी कुन्याई में फूल्या नीं समावै है। आणंद रा ठाट भरिया है, राजाजी मौत रै घाट सूं घिरिया है। पेट री पीड़ जावक मिटै है, वधाई वंटै है, गीत उडै है, निसाण घुरै है। तोपां में मणादंध दारू दागीज रियो है। राज मैल में मंगळ वधावणां हो रिया है। इतै नै ही एक वाणियो हाथ में छड़ी, माथै चूनड़ी रो पेचो, धोळो झीणो चोळो, गिटांताई रो पल्लो लटकती धोती, डावोड़ै हाथ में जड़ाव री वींटी, गळै में सोनै रा फूल, लामो डीघो खरखटियो सो भितराई में मुळकतो, थोड़ो झिझकतो राज सभा में आय नै राजा जी सूं खमा करै है अर नीं ओळखणै रै डर सूं एकै सागै ही कै देवै है के "म्हारी मोरां दिरावो पिरथीनाथ" राजा जी सैतरा वैतरा सा हुज्यावै है अर कवै है— "किसी मोरां"? वाणियो वताते

चढतो ही जावै है । ऊनैं फोगसीं ऊंट सूं ऊतरै है अर अठीनै सेठ दरबार में पूगै है । राजाजी न्याह-धोय परा आवै, सेठ नै आपरै बरोबर बैठावै है। फोगसी नै ऊंचो आसण देवै है अर कैवै है— के "फोगसींजी म्हारो परसूं सिंझ्या पेट दूखणो सरू हुयो। इसो दूख्यो जको म्हैं मर मर बच्यो हूं । बापड़ां वैद्य हकीमां रात्यूं भाजा-नासड़ करी, राजघराणै में घणो सांसो छायो। कालै थांरी दया, पीड़ा थोड़ी मोळी पड़ी जद हूं दरबार में आर बैठ्यो हो । इत्तै नै ही ऐ: सेठजी 'जकां नै हूं चैरै सूं ही नहीं जाणू' आया अर बोल्या— 'के थे कालै सिंझया ल्याया हा जकी म्हारी सौ मोरां दिरावो' । म्हैं कियो हूं तो थांरी मोरां लायो कोनी, कोई दूजो लेग्यो हुवैला । पण, सेठजी कवै है 'मोरां तो थेही ल्याया ह.' । बतावो अबै म्हैं मोरां देवूं कठै सूं ! ई झोड़ नै सुळझावण खातर चौधरीजी थांनै फोड़ा घाल्या है। सीयाळै रो दिन तो ढळग्यो पण ! थे अबैं बेगो सो न्याव कर देवो । जीमा जूठो पछै ही करिया। मनै रोगी नै ईं री बडी चिन्ता लाग रयी है । मामलो सुळझै तो सुख री नींद लेवूं ।

फोगसीं जाण्यों न्याव राजा रो है, चोखी तरियां करणो चाहिजै । दरबारियां नै, सैर रां नै, सेठ अर राजा नै आंतरै ले ले, न्यारो न्यारो पूछणो सरु करियो ही । राजाजी रो पेट दूखणो सगळां बतायो पण, मोरां एक बाणियै ही बताई । ओखद उपचारां रा हजारां नाँव वैद्य हकीमां घणा ही बताया पण घोड़ै माथै चढर

सिम्या सैल करण ह्वाळी वात ठिकाणै सर कैण ही नहीं लगाई। कठै ही आधी मिली, कठैही पूरी मिली अर कठैही मिली ही नहीं। पण फोगसीं नै थोड़ो मारग मिल ही गयो। जद राजा अर सेठ दोनवां नै कनै बुलाया अर कियो– " म्हैं पखस वेपखस, काण-कायदै बिना हुसी जिसी सांची कैस्यूं। पण करूं जको न्याव थां दोनां नै मानणो हुवैला"। दोनूं बोल्या— "मानस्यां" वोल्यो— "मोरां देणी भुळाऊं या नहीं दिराऊं तो मानणो हुवैला। अठै सेठ अर राजा री वात नीं है, 'फोगसीं रो न्याव' है"। दोनूं बोल्या– "म्हांनै मंजूर है" जद फोगसीं कियो– "तो वेगा सा जावो, आप आपरै घरां जीम आवो। दिन विसूंजग्यो है, पांख पंखेरू सै आप आपरै आळां में आग्या है। थेही आप आपरै घरां जीम-जूठ वेगा पाछा आवो तो हूं न्याव सुणाऊं"। जद राजाजी बोल्या– "चौधरी सा! म्हैंतो म्हारै मैल में अबार ही जीम आस्यू अर आप वेगी ही थाळ भिजवा देस्यूं। पण, सेठ रो घर अठै सूं घणो दूर है। सेठ जीमर पाछा आसी, इत्तै नै तो आधी ढळ जासी। इत्ती रात गिया म्हैं वेसार जागतो रै नहीं सकूं। सेठ नै अठै ही भोजन कराय देवो तिथा न्याव भूखा ही करो"। जद फोगसीं राजाजी नै कियो— "तो आप सेठ नै सोनैरी सौ मोरां ल्याय दो"। राजाजी बोल्या– "क्यूं"? फोगसीं कियो– "थे सेठां री घर गुवांड़ी रो आंतरो जाणो हो ज्यं"! सेठ राजी हुयो, राजा मोरां दीनी।



तो बिलड़ी नै पकड़णै रो उपाय सोचै है। जे आ बिलड़ी पकड़र घला देवूं तो सदा रो सुख हुज्यावै। नहीं तो एक दिन री वात थोड़ी है, रोजीनै रो तसियो है।

बहू दिनूंगै छोटियो बिलोवणो घाल्यो, सासू पूछ्यो- आज ओ क्यूं ? बोली— 'रात बिलड़ी दूध ढोल दीनो' ! "थारा बधैक म्हारा" डोकरी करी ही गाळां काढ़णी सरू। बोली मंगतां री जायोड़ी; देख्यो हो कदेई दूध ! अठै आर मींढै री मां भेड बणगी म्हारैर ई बहू रै लेखो ही के ? पण ! लेख रांड वेमाता इसा ही लिख्या। सोनै सै छोरै रो भो बिगाड़ दीनो। बावलियो तो थारो (बहूनै) जाणै मरग्यो ....." । गाळां सुणै जद जेठियै री मां नै घणी रीस आवै। पण हालै नै डोलै बैठी बोली बोली सुणै है। हिली हिल्ली बिल्ली होळै सै विलोवणै में मूढो देवै है, जद तकर जेठियै री मां सोट री इसी मारै जको बिलड़ी गुलांची खाज्यावै अर तरण बट सीधी हुज्यावै है। भाजण री आस अर सित्या निसरगी, ऊंधी पड़ी बिलड़ी लटपटावै है अर जाणै है के एक सोट री ओर मचका दी तो आंतड़ा ओझरा न्यारा न्यारा हुज्यासी। आंख तिरा देवै है, सांस खींच लेवै है अर पूंछ पादरो कर राखै। पण धाप्योड़ी जेठियै री मां झट जेवड़ी रै एक गांठ दे परीर पड़ी बिलड़ी रै गळै में घाल नाखै अर मांचै रै पागै रै काठी बांध देवै"। आंधी सासू सोट री

जोर री फटकार सुणर उठै है अर मिनड़ी पर पाणी रो लोटो ढोळै है। कवै है— "लापड़ी बिलड़ी तो मरगी। दूध खागी ही तो खागी ही; अबै के पाछो आवै हो। बिल्ली कुत्तै रो बडो भारी पाप है। कीनै ही कै: तो मत देई ! रुंली नै कतार नखा देस्यां। ठा पड़ग्यो तो तनै बिल्ली लेर, गळै में घालर गंगाजी जाणो पड़सी। ऊमर भर छाती पर बोझलो। बिल्ली नांई हीं तुरड़ा खोतर मरसी"! जेठियै री मां बोली— "बिल्ली तो का मरीन; मराई ! आंख उघाड़ै अर मींचै है। तेंगर करै है। म्हैं गाळी पाकर आई हूं, भानै सागै रोही घला देस्यूं। पछै रोही री बिल्यां सागै रळ ज्यासी। लारो छूट जासी; फोड़ो मिट जासी"। सासू गाळी रो नांव सुणर्योर बोली ही— "मर बळज्याणी ! हत्यारी पापण ! थारै हाथ रो रोटी पाणी छोडणो पड़सी। मरियोड़ी मिनड़ी रै हाथ लगा लीनो। अबकै तो ऊजळ छोड़ियो मिल्यो है पण आगलै जमारै में चुहड़ी चमारी हुसी"।

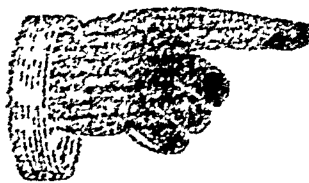
सांढ पर चार घड़ा, दही रा, सांगरां रा मोटा मोटा कुलड़ा अर आटै रा भरोड़ा कोथळा पावरा है। तम्बाखू, लूण मिरच, कसीर कुवाड़ा दोरा दोरा पजाया है। आज सांढ पर भार आगी घणो ही है। वळण देई बिलड़ी नै, मत बांधी सांढ पर; सासू कवै है। पण जेठियै री मां नै तो मिनड़ी अरसांसै हाथ आई है। आज ओ दुख मिटा ही देसी। चूकै ही नहीं !

पींडा लोही सूं लादेड़ा दीस्या हा । डरूं फरूं हुग्यो, जाण्यों ओः के विरतंत है ? सांढ रै चारूंमेर फिरै है तो परलै पासै उबाड़ै रै बरोबर मुड़ीएक हाडकी पांसळी अर मरियोड़ो ऊंदरो सो मूंढो, जेवड़ी रै लटकै है। सिंगियो मुसग्यो, दांती जुड़गी अर थोड़ो सो मोडकी रो सैनाण दरसण जोग लाग्यो है ।

काळजो उठलड़ो रियो; कांपण लागग्यो । जाण्यों के खेलो है । सटकैर काम करतां मिनखां नै हेलो मारियो हो— "वेगा आवो रे ! डेरै वेगा आवो" ! काम छोडर सै डेरै आया अर लाग्या हंसण नै ! बोल्या —"गोपजी ! जेठियै री मां आः जाणर थांरै वेगी बिल्ली रो जूण भेज्यो है के— जेठ रो मीणो है, जेठियै रो बाप बूजा काढै है, खा लेसी तो तावड़ो कोनी लागै" ! वात वोटर बीचाळै ही गोपजी बोल्यो "के हसोरे ! नैड़ा आवोनी बिल्ली खोलर आंतरै नाखां अर गांव नै चालां । नीं जणां भूखा मळै मरस्यां ! पाणी है न आटो" !

छोटियै भाई पोमजी बांधेड़ी बिल्ली देखी अर खोड़ नै लकड़ी सूं ऊंची करी । गोपजी मोरी रा भचीड़ देर सांढ नै जैकाणी । घोड़ी सूं जेवड़ी खोलर बिल्ली नै आंतरै नाखर आया अर सै मुसाणां सूं कांधिया सा घरां

दुरिया । मारग में सामी रोंवती गोमती मिली । बीं नै बीं रै चाव वुचकारी, गोदी लीनी अर वोलीराखर राजी करी । जद छोरी विल्ली री सगळी वातां वताई अर कियो—"वावा विलड़ी "मेंड विलावो" वणगी के ओ ?" सै साथ ही वोल्या—"वणगी" अर चालता थका घणा हंस्या ।



रो कोथळियो पुगायो हो; जको म्हैं आज मगद अर कीटी रो कोथळियो पाछो पूगारयी हूं। हमें रीस नहीं रावै अर म्हारै सूं मिलणै अवस आवै'। जाणो न जाणो थे जाणो"।

लजूंती भाभी रै मूंढै सू मीठा मीठा समाचार सुण्यां तो म्हारै डील रा रूंकाटा खड़ा हुग्या। लिलाड़ रा सळ निकळग्या, मूंढै मेळ छोड दीनो अर ल्याळ पड़णै लागगी। इसा मीठा समाचार पूछण वेगी भळे भाभी रै आगै भूखै कुतियै दांई पूंछ हलावण लागग्यो। चेतै आया म्हारै खेलण रा दिन अर सिर भूंवण लाग्यो। जूंनी अर भोळी प्रीत ऊभली! "जद लिछमां रै सागै खेलता हा! लिछमां लिछमां, ही, ही! जकां रै खेल में वडो मेळ रैतो हो। हा; सधरै सै कदरी, गटमींगणो सी घणी फूटरी अर गुणां रो गाडो ही। आखै छोरी छोरां में म्हारै बीं सूं अकै दांत रोटी टूटती ही। जकै सू भोळा टाबर म्हारै दोनां रै ब्याह री बात ही वणालिया करता हा। पण जकै वखत ब्याह सार म्हे के जाणां हा। म्हारै के साख या नातो हों तिथा म्हैं क्यूं सागै सागै खेलता हा! कदेही नीं सोची, ब्याह री वात तो आंतरै रयी।

मेह वरस्यो जद लिछमां आपरै गांव गई अर म्हैं पोसाळ खुलणै री अडीक में हळ वावण हाळा सागै खेत गयो। केई दिनां तांई लिछमां री ओळूं आई पण! छेकड़ भूलणो ही

हो । दूजां टाबरां सूं मिल्यो अर मदरसै गयो । थोड़ां दिनां पछै लिछमां री सगाई री वात म्हांरै सागैतां रै सूं हुणी जकां में म्हांरो कोई नांव-नोरो ही कोनी हो । मनै घणो दुख नहीं हुयो, जाण्यों भागरी वात ! जकां दिनां सूं ही आसा छोडी ।

लिछमां रै ब्याह री वात आई । हिवड़ै पर भाठो मेल्यो । सुण्यों के एक अपढ़ रै सागै बींरो ब्याह हुयो है, अणचींतो काळजो वळियो, जी जळियो, सांस उथाळो हुयो अर घणो आंख्यां में अंधारो छायो । देखो ! बिना कहे सुणे ही हिवड़ै अर अकल साथै लिछमां रा कित्ता लाड-कोड हा । पण ! वात निजोरी, सुणी अणसुणी करी ।

कैई दिनां पछै म्हैं ही नानड़ियो जुंवाई बणर सासरै गयो । बठै मालम पड़ियो के लिछमां रो मोट्यार अठै आयोड़ो है । ईं रो डर मनै इत्तो लाग्यो के लिछमां सूं मिळणो तो अळगो रियो, म्हैं चार दिनां तांई बांरै ही नीं गयो । कठै ही गळी-कूंची, हाट-बजार अर कूवै-जोड़ै लिछमां आंती-जांती मिल न जाय । जकै साथै आज बींरो ओः कोथळियो आयो तो म्हांरै माथै में दोरो आणो जरूरी हो । म्हैं हां हूं करतो रियो, भाभी केहा करणी ही गई । पण ! बींरै मिलण री मनस्या अर बलाणै रा बोल आज म्हांरो काळजो छोलरिया है । वात के है ? क्यूं मनै इत्तै वरसां तांई चेतैः राख्यो है ? इयै आंधी म्हारै माथै नै बावळो

बाप सागै किसोक हेत है ? घर-गुवाड़ी रा कै हाल-चाल है ? बरविवरी वातां तो वताओ" ।

लिछमां रै आँख्यां में आँसू आग्या, मूंढो फेरलियो अर नाक सूं पाणी सिणकती ही बोली— "दो टाबर है, दोनूं ही बेटा! जको थारै ऊंट नै लेयर आपरै बाप कनै खेत गिया है। खेत काकड़ियां, मतीरियां सूं गळै है। धान रा ढिग लागरिया है। बोको आड़ो जीमा हां अर नूंवो मेळो करां हां। घरां मा:कळो घी रा है; घी रा घड़ा भरिया पड़िया है" । म्हैं, हँकारो देतो रियो। छेकड़ म्हैं "हूं" कयो जद लिछमां बोली— के 'अ: म्हारै लिलाड़रा लेख' ! थां सूं छूटणै रो दुख नहीं पण ! टाबरां रै बाप सूं न संचणै रो सोच है। ऊपर तोहियै जिसा आदमी है। इकळंग बळ-भूजता ही रवै है। म्हैं वतळाऊं, बोलै नहीं ! म्हैं बोली रूं, जद गाळां काढै। कुत्तै बिल्ली रो सो बैर चालै है। ईं रै वास्तै ही सूक रची हूं। घर री वात कीनै कहूं अर कुण समझावै ? ईं ऊसरदुत रै सांयलै मोटै दुख नै कैवण वेगी, दिल रै देवता नै वतायो है। जाणू म्हारै रोग रो ओखद करसी अर सुख रा पांवडा भरसी।

सारै दिन दोनवां दुख-सुख री करी म्हारी सुणाई, लिछमां री सुणी। टाबरां नै म्हांरै कनै भणावण रो भरोसो दीनो। म्हारी जी सूं प्यारी टाबरां री मांरे, कूड़ी सांची करी अर लिछमां नै घणो धीरज बंधायो। खुद रै सुखी संसार नै दुखां रो घर वतायो

अर पुराणी प्रीत री पीड़ में डूब्यो । पण ! म्हारो जी अबै ई घर सूं जावक ऊब गियो है । घरां घणो काम बतायो, भळै आवण रा वचन दीना, चिलम में साफी घाल पावरी समाई अर विदाई मांगी ।

आथण हुयो, खेत सूं ऊंट आयो अर म्हैं पलाण रो तंग खेंच्यो । लिछमां मन सूं धिणाणी मनै चढावण नै त्यार हुई । बोली—"म्हारी मेण नै घणा घणा राम राम देया अर टाबरां रै सिर माथै हाथ फेरिया" । लिछमां अपार बारलै सम्भाळै गांठड़ी रैत्रग हाळी अर म्हैं मैर में; ईं रै वासतै म्हारै बोरै में मेकळा मतीरिया-काकड़िया घाल्या है । भळै फळी फोफळियां रा के.मळिया, छोटा काचरां री बेल अर मीठा सटकाचरां रो खारियो भर नै बोरै में खिणावण लागी जद म्हैं हाथ पकड़िया, अर बोल्यो.—"सटकाचर म्हे खावां नहीं, छोड राख्या है" । लिछमां चमक चेतः करण नै लुली । बोली- "क्यूं" ? म्हैं कियो— "हूं थांनै बचपण में 'सटकाचर' कैया करतो हो" । फट ! हाथ ठैरग्या ।



जोखो हुंतो हो । बूढा-बडेरा एक कालगै छोरै नै आगी बैठो देखता तो वडो चिराको लागतो, चानड़ी बळ जांती अर बळभूंजर खीरो हुजांता । बाबू सीरीकिसन इसै मौकै लोगां री मींट नै ताड़तो अर समझांवतो । कैतो "माळीदान वडो जोर रो पिंडत है । 'गांव रो छोरो बारलो बीद' आपां गिणां कोनी पण वडो गुणी है" । बाबू री आं वातां नै काटण री कींरी ही हिम्मत पड़ती नहीं । सगै सूं माळीदान ही गांव रो मुखियो वाजण लागग्यो ।

लखपतीरी मितराई में ही मौज ! खरच-बरच पारको अर नांव नामून निजरो ! इण तरियां बाबू सीरीकिसन आपरै मितर माळीदान पिंडत नै आगै लीनो अर घणो खुसी हुयो । बाबू आपरै घरां बूढां-बडेरां में तिथा गांव रा धरमाधारी मिनखां में माळीदान री गैन पिंडताई रो परचार कर परो पिंडत रै पको घर अर गुजारै रो मारग वणा दीनो । जे कदास वाळ कुसगै में पिंडत रै पूरी पैदा नहीं हुंती तो बाबू आपरै सागै, सोदै सपट्टै में एक झपट्टो दिरा दिया करतो हो । माळीदान री घरगुवाड़ी अर इज्जत आछी वणगी । बाबू रो सोणो सागड़द वणग्यो ।

गांवरा चौधरी, गिरदावर, पटवारी अर मास्टर-दल्ला आखा करमचारी लोग आं दोनां री ठंडी निजर रा भिखारी वणग्या । हां ! बाबू श्रीकिसन धन अर उपकार रै कारण मानीजै तो माळीदान बामण जात अर पिंडताई रै कारण पूजीजै । दोनूं

सूर चांद री सी जोड़ी, हीरां पन्नां री सी लड़ ! एक सो ही माण अर एक सो ही थाण ! मूंग मोठ में कुण घाटू ! दूध पाणी दांई दोनां उफाण खायो अर घुळमिल ऊँचा आया। पाणी में लूण दांई अर घी में सक्कर दांई एका हुया। कींरी मजाल है जो बाबू रो काम बिगाड़ देवै। पिंडत री धाक पड़ै, बो: जाड़ काढ लेवै। जे कोई बाबू री कटवीं ही कर देवै तो पिंडत राम मारी कै देवै, धरम उठा लेवै अर गंगाजळी चक लेवै।

तीन बरसां सूं गांव पंचायती रो चुनाव आयो। लोगां में नूंई जोत जागी। पंच तो सै चुनीजग्या पण ! सरपंच वेगी बाबू सीरीकीसनजी रै भगत पिता श्री फरसरामजी पर गांव रै आखै जणां री निजर गई। जनता रो निसाणो सूंवों अर सांचो लाग्यो, सरपंच जोगतै ही पुरख रो पत्तो पाड़ियो। फरसरामजी आपरै माळा सिमिणयै में भिजोक पड़तो जाणर घणा ही नट्या, पिंडत माळीदान रो नांवों बतायो। पण ! गांव रा मिनख नीं मान्यास नीं मान्या ! आखर बात मानणी ही पड़ी, सरपंच बणण नै त्यार हुया। बाबू श्रीकिसन चुनाव रै बन्दोबस्त में लाग्यो।

पिंडत लारला दिन भूलग्यो। ओसथां में छोटो है तो कुण बतावै है ? जात में तो सदा सूं वडो है। न्हार बणग्यो अर दररायो ! बाबू री आबरू माथै आज हमलो करणै खातर पंजो पटक्यो। गिरास करणो चायो अर दावड़ियो। पिंडत रै एक धरमभाई है स्यामकरण गौड़; जको जात-वाद में आंधो हुयो फिरै

है । पिसियां रो धणी, वोपार में वाणियां सूं आगै काढै । एक आंख सूं लखो झाँकै ! सागै सागै गैरी तिथा घणो खोटो ! ऊपर सूं मीठो बोलै, संसक्रित सब्दां रो परयोग करै अर हरिइच्छा री दुहाई देतो थको आपनै वडो भगत परगट करणो चावै । पण ! पेट रो पापी अर धोखै बाज ! कतरणी चलावै है, छुरी राखै है। धोळा गाभा, पतळी जनेऊ अर लिलाड़ री सळां पर केसरिया पाग रै रंगीन पसेव रो पाणी ! ओः स्यामकरण अबार लोगां में जातीवाद रो झूठो भरम फैलावण रो काम करै है । माळीदान नै फरसरामजी सूं भिड़ांतो थको सरपंच वेगी बिरोध में खड़ो करै है । अर कवै है— "सरपंच बिरामण बणनो चाहिजै, अर थां (माळीदान) जिसो पिंडत ! बिरामण सदा राजा-पातस्यावां रागु रू रिया है। वडा वडा समराटां बांरै पगां में सीस झुकाया है। बैः बिरामण ही रामराज में सिरैपंच रै जोग है"।

स्यामकरण आपरै नाई नै बलायो; माळीदान रा केस अर कपड़ा धुवाया। कड़पदार साफो बंधायो, आपरा काळा बूंट पैराया अर कानांवाती करतो सभा में ल्यायो है । स्यामकरण, पंडित री ओट में सिकार खेलै है, पिंडत आपरी रक्षा खातर स्यामकरण रो कवच बणावै है !

सभा में आर स्यामकरण आपरै पिंडत भायेलै रो सरपंच बेई परस्ताव राखै है अर फूल्यो नीं समावै है । माळीदान आः वात देखै है जद मन में लाडू सा फूटै है अर लंका सी लूंटै है। पंडत

पारकी सीख चालणियो पाधरो सरळगंठ ! अभमानी ठूंठ, मोटी मूंछांर पागड़ी, अकड़धज अड़वो सो, गोमसोम अपूठो ऊभो घणो राजी हुवै है। ऊपर सूं सरवजाण, भीतर सूं सिद्धान्त होण। कदेही कट्टर सनातनी, कदेही कट्टर काँगरेसी अर कदेही कम्युनिस्ट बण ज्यावै है। स्वारथ संधै बठै ही किरड़ियै रो सो रंग वदळ लेवै है। साल में सौ सांग वणावै पण पिंडत वाजै।

भांड लाज वारो ऊलफैल करै, रिपिया झाड़ै अर पेट पूरण करै है। ठाकर ओधबारो, ओगै गांव उजाड़ै अर वडाई करै। आडी आंख्यांळो मिनख कुकरम करै, खेला रचै अर वण्योड़ी वात रो विगाड़ो करिया करै है। आः नीति ही पूरी लागू होवै है, स्यामकरण चुनावरी शांति खोवै है।

वाबू सीरीकिसन सोणै चैरै रो छड़ेछड़ीलो जवान ! आंख्यां पर ऐनक, रोवीलो मूंढो, पांच टाबरां रो माईत ! पण वूढै वकील दांई दिमाग सूं वात करणियो; हंसतो सो बोल्यो :—"बापूजी ! पिंडत जी रै बरोबर थे खड़ा मती हुवो ! जीत ज्यासो तो लोग वातां वणासी के 'फलाणै रो बेटो पोतो, वूढो सारो एक बामण रै छोरै सूं जीत्यो है'। हार जासो तो सफा पाणी ही फिर जासी। मृतक भंड जासी, वडेरां रो कुनांव हुसी अर वूढवारै में वडी हंसी हुसी। अबै तो थे पिंडत जी रै सागै मनै खड़ो हुवणदो जीतोर चाये हारो पण !

बरोबरियो हूं ; साथी साईनो हूं अर थांरै आगै टाबर गिणीजू हूं जीत जासूं तो आपणै घराणै री सेवा मरजाद निभासूं । मान वडाई भूलर गांव री भलाई नामून करस्यूं । वैर विरोध राखूं कोनी । पखस वेपखस करूं कोनी । न्याई अन्याई नै सीख देसूं हार जासूं तो पिंडत जी नै वधाई देसूं, पारटी लेसूं अर बांरै काम मैं जी जान सूं सारो देसूं" ।

सेठ फरसराम जी रो लारो छूटग्यो ; राम लाधग्यो । फूल्या फूल्या घरां गिया, सगळां देई देवतां नै धोक दीनी अर सुख री नींद सूत्या । टाबरां पूछियो "बापूजी ! कुण जीत्यो" ? सेठजी बोल्या — "म्है जीत्यो ! जको खुलो माळा फेरसूं अर राम रो नांवो लेसूं" ।

पिंडत जी री पेटी पर तो सागी ही नाँवों रियो पण ! सेठजी रै नांवै माथै बांरै एजेन्ट "बाबू श्रीकिसन मोहता" लिख परोर चिपका दीनो । निर्वाचन करण हाळां अफसरां घडी देखर घंटी वजाई । आयोडां मिनख लुगायां नै पुलस हाळा एक रै पछै एक पेटियां खनै मेलणा सरु करिया ।

चुनाव घर आगी मिनखां री भारी भीड़ लाग रयी है । पेयां खुलणै रो वगत हुयो जारियो है ; एजेन्ट घूम रिया है तिथा चुनाव रा वोट गिणनै वाळा कागद कलम लियां गिणनै

वेगी त्यार ऊभा है। आदमी वारणां में कान दियां खड़ा है, लुगांया डागळां चढी देख रयी है अर टावर जै बोलण री अतोक लियां भेळा हो रिया है। बाबू सीरीकिसन आपरै भायेलां सागै हार जीत री वातां करतो खुस मन खुलो फिरै है। पण! माळीदान एकान्त में बैठो कांस में कळप रियो है। ऊंचो चढ, आडो ढक, पलाथी मार पूजा करै है। आगै देई देवां री देवळियां, हाथ में धूपेड़ो अर आंख्यां मींचेड़ी है। आरती गावै है अर माळा फेरै है।

हाकस हार जीत सुणाई, प्यारां मितरां हाथ मिलाया, गांव में सोनै रो सूरज ऊग्यो। बाबू सीरीकिसन टाबरां नै मिठाई वांटै है, बूढा वडेरां रै पगां लागै है अर माळीदान रै घरां आसीस लेवण नै वड़ै है। घर रां टावरां बतायो जद माळियै रो कूंटो खुलायो। अगर बतीर धूप रै धूंवै सूं आंख्यां भरीजगी। "पाये लागूं पिंडत जी"! पिंडत वळ भूजर खीरो हुग्यो पण! ऊपरला दांत दिखाळिया अर जी सूं बारै आसीस दीनी। सीरीकिसन रै पाछै मुड़ते ही; पिंडत जी मूरत्यां नै पटक फोड़ी, माळा नै तोड़ वगाई अर धूपड़ै नै उळट फेंक्यो। मूंढै-मूंढै सूं चुनाव चरचा नही सुणनी चाही अर कायर वणर मुंह अंधारै ही मगरै कानी जजमानां में टुरिया।

पिंडत जी रै घरां बास रा टावर टोळ वणायां खेल रिया है। आवा एक पासै जनता रै रूप में चोकीरै नीचै वोट देवण

गुणंनत्तर

पीयै दीखै है। ईंयां कर कर कई बिरियां बूढा वडेरां नै धोखो दीनो, धूंवैं सूं उळटी करी अर होकै रो पाणी गिटियो। पण ! माऊ रै डर सूं तम्बाखू रो नसो तो झाल्यो ही नही। मामो जी गांव गांवतरै सूं आंवता जद गूंझिया संभाळतो। बांरा गूंझिया कदेही खाली नीं मिलता। बूढा आप बीड़ी रो बंडळ लाधतो ही। बूढै रै बंडळ री सीबी घणै चाव हरख सूं देखतो, रामकुठण रामदास अगखाले बांचतो अर तीन सातां री जोड़ इक्कीस दे परोर चार बीड़ी गुलक में धरतो। भायेलां नै बांटतो अर लुकर पींतो। धोती री लांग में लुकायां राखतो; जद डरतै रो जी जांतो। औः काम करतो पण ऊजळो वण्यों रैंतो"। बासरा कैंता—"छोटियो वडो स्याणो है, रामजी सरावण विरियां क्यांनैं देवै"।

तम्बाखू रै धूंवैं कानी तो जी चलायो पण ! गांजो, सुलफो, भांग अर सराब तो आंख्यां सूं ही नहीं देख्या। गूंगै हुणै सार तो कदेही नीं जाण्यो। जे कदास कणा ही छोटै थकै नै बाळसंगळिया भायेला मकड़ी चढा देग्या करता जद गाल काढतो, बांरै लारी भाजतो अर मींगणा पोटा खा जाया करतो हो ! के कणां ही काळीजी रै जागण में बचपण री छायां आ जाया करती तो ंकळां सूं सिर फोड़ लेतो। धिंगाणै रो गूंगो कैई बिरियां बण जांतो पण ! नसो कदेही नीं आंतो।

बोत्तर

होळी आगला दिन, देवर भाभ्यां रंग भर पिचकारियां सूं गैर खेलै। रंडवा डफ पर नाचै, डंडिया जोड़ै अर सांग वणावै वांडा ताळा जड़ै, गीत सुणै तिथा चांदणी रातां री चैळ पैळ में भाज्या फिरै है। इसै उमंग रै ओसर माथै म्हारै गोठ री जी में आवै है। पण! काळ री वखत दूध लाधै ना घी! सकर लाधै ना खांड! छिनमें री छायां, दो आना री मजूरी, गोठ कियां घुटै? पण! "डबांक्योड़ी तो ढेढ ही कोनी राखै" आज तो सैग भायेलां दूधिया छाणनै री ही जंची है। कोई दो विदाम रा गोटा ल्यायो, कोई काळी मिरच रा चार दाणा। काज्यांळी बकरी दुहाई, नाथजी हाळा सिल लोढा लिया अर सुरजो माराज मूंगां पानड़ां रै सागै धतूरै रा बीज-रळा परोर रगड़का देवण नै बैठो ही। आपरै घरां सूं मांटो वडेरां रै हाथ रा दो गोटिया पइसा ले आयो। जकां रो काट सागै घस घस घालै है।

सात जणां में दो दो गिलास पांती आई। म्हारै वेगी भाग सूं नीचली जाडी जाडी ऊबरी। म्हैं ऊपरला मनां सूं तो कैंतो रियो "मनै चढ जावै, घणी कोनी पीऊं! पण मूं मीठो हुवै जकां सूं जाणो पेट मंगतो वण रियो है। आगै री कीं नीं सोची, कोनी कोनी करतो रियो अर गिलासां भर भर गारगडो पींतो गियो, क्यूं के होळी है।

बूढी मां जकां रा परणाया पताया तीन वेटा तो आगीनै गिया। दरोगी म्हैं अेक ऊवरयो; म्हारा म्हारी मावड़ी सांस गिणै। "आज

नागड़ै खादो कुण मरै हो ? जकै मेरै भूरियै नै भांग पाई"। मांचै रै सिराणै बैठी मां म्हारै सिर पर हाथ फेरै है अर कैती जावै है— "भांग सुलफा तो मोडां भरड़ा रा है। गिरस्थी आं:कांमां नै के जाणै ? पण गांव में घणा ही कुलछणां मरै है"। म्हैं माजी री हां में हां मिलाई, राजी करी अर खुद री सफाई दीनी। बोल्यो— "बोदियै मिंदर में पुजारी जी ठंडाई वणाई ही। दानाराम नै, मनै अर सुरजै नै पीवण वेगी धामी। नोरा काढ्या। छेकड़ धिंगाणै पा दीनी। मनै केठा इयै में भांग है, थोड़ी पीली"। "थारा वधेक म्हारा" मां बोली— "सांपड़ो खावै रै आं:पुजारीड़ां नै ! मोफत रो आटो खावै है अर बैठा भांग पीयै है। पण म्हारलै छोरै नै क्यूं पाई ? रांड मरै आंरी"!

म्हैं सूगलै सुभाव रो बाप बारो सिरड़ियो अर लाडेसर लड़थो हो। भायेलां में खाऊपीर, मसकरो अर अगवो हुयो रैतो। वखत बेखत गांव में निसंग खेलतो फिरतो। पण ! मां रो पूरो काण कायदोर माण ताण राखतो। गांव रा बडेरां नै ही कदेही उत्तर नीं दंतो, सामो नहीं बोलतो तिथा पारकी पीड़ में ही रोवण खाळै हुजाया करतो। कीं परण्यों, कीं कुंवारो, जुवानी आई बोझां बांठक दांई कंटीलो हुयो। ऊत काम सीख्यो। अबै माजी री अकल काढ़ हूं, बे कसूर वणूं हूं अर कसूरवारां रै सिर कूड़ो अळवाड़ो हाथ हूं; के भांग भुळार पा दीनी।

सिर रा बाळ उतरा लिया, धोती री लांग खोल लीनी, म्हाणो धोणो छोडर रोगलै रो सो भेखधार लीनो है। घर में सूतो पोथी

बांचूं; नौकरी वेगी अर्जी लिखूं पण बारैं जावण रो तो पूरो भो वैठग्यो है। अेक तो वां घरां आयोड़ां मिनखां री लाज; दूजो; भायेलां रो डर! जकां बांपड़ा नै बिना गुनै ही माजी खनै सूं गाळ ठोकाई है। केठा वै: सुणसी तो कें कै:सी? पण बां सांचैला साथीड़ा नै गाळां री तो रीस नहीं है पण! म्हारी बेमारी सुणर घणो फिकर हुयो है।

तीनूं जणा म्हारै घरां आया, मांचै रै सारै डरता सा बैठा अर बोल्या— "किया है माजी"? म्हैं झट मौन साधी, थक्योड़ी जीभ रो सांग बणायो अर आंख्यां तिराई। भायेला म्हारै कानी झाक्या अर बोल्या— "अबै सावळ हुज्यासी डरे मत! ऊजळै मन री मां बीच में ही पोल खोल दीनी। मनै बोली ही— 'बोलरे थारा साथी आया है नी! इताळ तो रामायण री चौपाई वांचै हो। अबै संको क्यांरो है? जद तो वणग्यो 'भांगेरी'! बिच्छू रो झाड़ो ही नीं जाणै, सांपनै हाथ घाल्यो! पूजारी जी! एक दिन तो हाथां वासण छूटग्या हा। पण नसो उतरतां ही सा रो आग्यो"।



नाई चावळ चाढै है। रातीं जोगै रा गीत होंठां सूं गुणीजै है, मैंदी सूं हाथ मांडीजै है।

सोभै री मा केसर रै घरां आई अर हंसी करणै री जुगती जंचाई। पीढै माथै बैठती थकी बोली— "नणद! नेग देवो तो नूंवा बनड़ा (गीत) ल्याऊं। व्याह तो बायल कोयल हुया करै है, बार बार ब्याह थोड़ो ही हुवै है? ढोल टीक, आखा घाल, गुड़ री भेली दे अर सुवा पांच रिपिया नेग रा काढ। म्हैं जाऊं हूं, नूंवां बनड़ा ल्यावण नै"। केसर बोली— "भाभी चटको कर छोरै नै दूजै मस्सां फेरा देऊं हूं, अबकै तो सै सूण मना स्यूं। पैलकै तो बहू मरगी, अबकै जींवती रै तो ही चोखी। थाळी भरी कणक री मां: मेली गुड़ री, भेली, ले सुवारिपियो अर ढोल टीकण जावै है।

सोभै री मा ले कोरी हांडीर बैठगी वडोड़ै कोठै में, जठै टांटियां रो छातो हो। हांडी रो मूंढो लगा छात रै सारै अर अंकोड़ियै सूं टांटियां रो छातो हांडी में नाख लीनो है। चट ऊपर दे लाल बुसी रो टुकड़ो मोळी सूं मूंढो काठो बांध दीनो अर हांडी उठा ल्याई कोठै रै बारै केसर कनै! कोठो गांव रै बीचाळै रामदेवजी रो मिंदर, चिड़ी चमचेड़ां रो घर सूनो अर सूगलो पड़ियो है। ईं मिंदर रा पूजारी है दमामी, जकां अठै एक ढोल मेल राख्यो है। ईं ढोल नै लोग ब्या–सावां में टीकण आया करै है। सोभै री मा केसर कनै आर बोली— "नणद दे नूंवा

वनड़ां नै धोक ! अर लगा कळस (हांडी) नै कान रै सारै'र सुण वनड़ां रो झिणकार ।" केसर घणी राजी हुई । किसाण रै बखतरो मे' बरस्यो, उम्मेदवार नै नौकरी लाधी अर वाणियै रै तेजी आई । केसर दोनूं हाथ जोड़्या, गोडी ढाळी, सिर निवायो अर बोली— "हे माराज ! अबकै तो वहू नै जींवती जागती राखीज्यो ।" हांडी रै कान लगायो तो सुणीज्यो टांटियां रो भण-भणाट ! भळै बोली— "बनड़ा तो आछा है भाभी ! राग बडी सोवणी है ।" सोभै री मा सीख दीनी के "कोठी में मेलदे केसर ! रात रा जरूरी गास्यां ! हांडी कैण ही खोल दीनी तो उड जावैला" । केसर कियो "घरे जार कोठी में काठा मेलस्यूं अर आथण म्हैं ही गीरस्यूं" ।

घी री वग्घ वाजै है । गोवणियै री धार थाळी ऊपर कर काढै है । चावळ तो थोड़ा चानकी रा लेवै है, लोग कोरो घी ही सूंतै है । सिनख जीम लीना है अर लुगायां जीम रयी है । पांत उठै है अर पंच भूखा टाबरां टीकरां री थाळी करण वेगी बैठै है । पण केसर रै तो नूंवां वनड़ां री धक अर धुकण लाग रयी है । कन्नां काम नीवड़ै अर केसर वनड़ां री हांडी खोलै । जीमै ना जूठै, कोडां सें भूखी ही भाजी फिरै है । लुगायां नै गीतां रो बुलावो दे देवै है अर आपरै नाळियै रै बांध्योड़ी कोठी री कूंची नै वेगी वेगी संभाळै है ।

गीतेरण लुगायां आई, गूदड़ा विछाया अर गीत गावण लागी ।

म्हे ही सोगी" सोभै री मां बोली– "रातीजोगो वासी रैसी के! वळियो डोळ गीतेरण्यां री, खोलो किंवाड़ केसर नै काढां अर रातीजोगो देवां"।

थाणैदार सूं सिपाही, मास्टर सूं छोरा अर आंधी सूं धोरा भीर हुवैं, जिया ही सोभै री मां रै हुकम सं सगळी सीखतड़ गीतेरण खड़ी हुगी।

केसर सूजर भड़तू हुगी! कोठी में अचेत पड़ी किरावै है। कवै है "भाभी मार दी मनै तो, औ बनड़ा तो दोरा ल्याई। सुवासणी हूं हीं नहीं चूं। तेरी हंसी अर लाड कोड तो मिनख मार देवै"। सोभै री मां हंसती सी खा काळी मिरचर मिसरी, ऊपर पी चा अर ढळती सी रात रो मीठो सो "काळओ" अगेरियो। जद घणैं रंग सूं रातीजोगो लाग्यो।



[११]

छांई-मांई

छिण मिस छिण मिण छांटां, परवाई पून; सिम्या री झालर रै डंको लागै हो अर चारां कानी चरचरी चूंचावै ही। रात आवण वेगी घेरा घालै ही। चानणो जावण खातर तड़फा तोड़ै हो। जगती रा आखा जीवां री आंखां में मीठी मीठी नींद घुळै ही। पण वो: किरड़कांटियो सो रोगल, सिर माथै गमछो नाखे, बोलो बोलो बैठो, जुवान मुख राम भाड़ै रै घर में दावण वारै माँचै माथै आपरी ठग लकड़ी रो भाड़ो उथळै हो। अणहूंती चालती राड़ सूं घणो राजी हो। दो मिनखां नै लड़ा देणा; भिगाणियो पंच बणर, दो ऊनलै सूं, पांच बूनलै सूं खोस खालेणा अर घर रो आवो थिकावणो, बींरो धन्धो हो। बींनै केठा कूड़ी साखां भरणी कित्ती माड़ी हुवै है। वो तो आंहीं वातां रा खोज काढतो मगन रैतो। कणा ही दो सिर सें हीं पड़ जांती अर कणा हीं सूको हीं निकळ आया करतो पण! ऊमरो सूको नीं काढतो।

नै वलावै, सला·सूत करै माण-ताण सूं दोनां वखतां जिमावै अर पूछ ताछ में आगै राखै ! चंदो चपाती हुवै तो लोग दिये बिना ही डरता ऊपर ओळी खींचै। ओसर मोसर हुवै तो बारै दिनां तांई टाबरां टीकरां समेत चग्गा करावै; पांतियो घलावै। जे कोई भोग सराध ही भरै तो पैली मुखराम रो नांवो गिणै। गांव गांवतरै गयोड़ो हुवै तो सिग्ग तिथा सेस टाळै ! जासै तो वधाई, पास हुवै तो मिठाई अर देस दिसावर आवै जावै तो चेतै राखर मुखराम सै चुकावै। कोई धोती जोड़ो, कोई गिंजी, कोई तेल सावण, सन्दूक अर घड़ी घणी ही मुखर... देवै। पीसा तो अेकर जावै पण साल भर मुखराम रै मूंढै वडाई तो हुवै। जिमावै जकै नै ही कवै "इसो सोरो तो थारै ही घरां जीम्यो हूं। ईयां कर कर मुखराम अेक अेक नै झाड़ै। जगती मुखराम री सोखीनाई रो अचरज करै; पण बींरै तो सो गांव दूझै।

दूजां री कमाई माथै ही धोबी सूं धुवायोड़ा गाभा पैरै, वाईस-कोप देखै अर वडो रसीलो हुयो रैवै। सगळां रो दबेल पण ! पंचायत में पांच बात आगलै नै हीं सुणावै। लूंठा लूंठां सूं मितराई राखै पण ! मुतळब सजै जठै ही तांई ! वडा वडा सरबजाण अर सीधा मिनख ई री संगत में मातखाग्या मो I सोट पिवातां नेअैण प्यालो चटा दीनो।

काठ पील रै समै, अेकरगै मुखराम आपरी जजमानी में गयो। वढे 'बार गांवां रा मिनख ईंरी भोळी वुगलां पिडताई सूं घणा

राजी हुया। ऊजळा वसतर अर लफरी जवान काम काढगी। जातरो तो वामण पण ! भींट अैंठ रो नांव नीं मानै ! माळी हुवो चाहे मोची, सुनार हुवो चाहे सुथार, सगळां रो गुरु बणै। अेकलवाणै तो मुसळमान रै ही सागै खा लेवै; पण मिनखां में छूछा करै ! पाणी ही वामण रै घरां सूं मंगाय परोर पीवै। नूंवै जमानै री वातां सुणावै, वामण री किरत गावै अर सागै सागै हाथ तिथा गिरह गोचर ही देखै। इण ठग्गू पिंडताई में मोकळी रसोई आवै है, सोवै रा ढिग लाग रिया है गेवां रै आटै, गायां रै घी अर नूंई सक्कर रा गूणियां भरिया पड़िया है। डटर माल उडावै है, पकी चिलमां पीवै है अर दादो वण्यो मौज करै है।

अेक दिन अेक जाटणी आई। वा: धूजती सी सुखराम रै पगां पड़ी। हाथ जोड़र बोली "दादा मेरा रिपिया सौ कैण ही काढ़ लीना। अेक अेक दो दो कर भेळा करिया हा, जाण्यों छोरी रै व्याह में आडा आसी। पण ! कोई मरग्यो, पैल्यां ही काढ लेग्यो। काळजो वळै है, होळी लेवै है। म्हे तो कीं जाणां कोनी आंधा चूसा हां ! थानै सौ ठा पड़ै है, सैंसाकरत भण्योड़ा हो; कुण काढ्या है जकी वात वेगी सी वताओ। टीपणो काढ़ो अर परचो देवो। नीं जणां दादा ! मेरा रिपिया खरचीज जासी ! ईंया कै परीर कूकण लागगी। सुखराम चट वोल्यो ही "नाड़ दिखाळ थारी" ! चोधरण करियो हाथ आगीनै; जद सुखराम नाड़ झालर बोल्यो अर वड़कड़ीजी "के तनै ठा है नी ए ! तेरो वैम सांचो है"। बोली-"हां टावरां गै वावै अर छोटिये छोरै काढ्या है।" जद बोल्यो "जा वां: दोनां नै मेल" !

माथै पर धोळो साफो, हाथ में लामो लठ्ठ, अर आंख लाल करें फतू सांढ़ नै टिचकारै है। हळांहूँ टूटेड़ी सांढ़ टकै पांवडै चालै है। बारै कोस में एक रातर आधो दिन खा जावै है। दिन ढळसै सासरै पूगै है। जद गांव में वड़तो फतू कूदर सांढ री मोरी खींचै है। घर री गळी लेवै है। लामो लड़ाक, काळो कुरांट, भूतां रो सो भाई, गळी बैंतो सगळै गांवड़ै में दीसग्यो। गुवाड़ में खेलता टाबर गूघार भाज्या अर आपरी मांवारी झोळियां में वड़ग्या। चांरू मेर हू हा हुगी! माईत टाबरां नै बोला राखण करै है पण। गळी बैंतो फतू वाड़ रै ऊपर कर दीखै है, टाबरां रो काळजो हालै, छाती फाटै। मोड़ासा टाबर बोला रिया जद आखै गांव में ठा पड़ियो के ओतो सुन्दर नै लेवण पावणो आयो है। जद गांव रा मिणख बोल्या— "जद ही छोरी काळो ढैंरो हुगी"।

गळै गळै सूणो घास, असाढ रो तावड़ो, चरड़ चरड़ माछर चामड़ी चूंटै है। जकां में सुन्दर एकली ऊभी, निनाण काढै। मरूंडियो मारियोड़ो, कांढां हूँ लप्पू, ओळांहूं मारेड़ी कमेड़ी सी घास में उळझ रयी है। पण कसियो करोती सो वगै है। "झफा झफ" घास रा लारी ढिग लाग रिया है। आथण नै लादा दो उलाळै है। आथणसेरै थोड़ो फतू ही सारो दिरा देवै है। बाकी तो सारै दिन तावड़ै में झूंपड़ी में सूतो लैरा लेवै है अर हुकम चलावै है। वूजां हूं लेर पालै तांई घणकरो काम

छिनमें

सुन्दर रै हाथां सूं ही हुसी। निनाण, निनाण सूं घास, सेवण हूं लासूर लावणी। फतू तो खाली खेत वावै अर लावणी कर देवै, बाकी काम तो सो सुन्दर ही सळटावै है। सागै सागै घर हाळो पाणी पीसणो ही आद्दी करै है। सासू तो दूध बाजरी जीमै है अर वाणियां रै घरां सूती हथाई करै है। बापड़ी सुन्दर इत्तो तो खोरसो करै अर ऊपर कोरै मोठांरो बाटियोर धपाऊरी गाळ मिलै है। सासू मतो करै जणा ही कूड़ी सांची करर बेटै कना हूं कूटा ही देवै।

सुन्दर रै आयां पछै आं: दस वरसां में तो फतू रै खेत में घणोही धान हुयो। ईं साल कुरियो मुरियो है, लोगां रै पांचिया, दसिया दाणा हुया है। पण ! फतू रै तो पूरो पचास मण घरां आयो है। सुन्दर बापड़ी अेकली ही फंफती फिरै है। खळो काढ्यो, कूड़ी ढकी अर खेतरी वाड़ करी। फागण में सो काम निवेड़र घरे आई। जद आगैं खंदा खुदता त्यार लाध्या।

सूधी लुगाई रो मोट्यार, लदू-भारकढ ऊँटरो धणी, अेकलहटी या निपुत्रो वाणियो कदेही दुख नीं देखै। सदा मौज ही कर्‌या करै है। माटी ढोई सुन्दर अर रिपिया चूंदण नै फतू आयो है। चोवटै में बैठो गप्पां मारतो जद सुन्दर रा खंदा खोदतां खोदतां खुरियां घसग्या हा। वडोड़ो छोरो न्योलियो बापड़ो घणी विरियां मां नै सारो दिरावण आंवतो अर माटी नखांवतो। अबैं हफतो चूकै है जद फतू ही आयो है। सुन्दर गूंघटो काढै पसवाड़ै खड़ी है,

"लूकी रा लख मारग" ! फतू तो गप्पी जको कठै ही चौधर करतो फिरै है । टाबर छोटा, मा बाप अळगा, बापड़ी सुन्दर कवै तो कींनै कवै ! दो दिनर दो रात भुगतती नै ही बीत्या। तीजै दिन फतू आयो तो मा घर माथै पर उठा लीनो । बोली— "तूं तो फिरतो फिरै है अर तेरी रांड मेरै कनै हूं हीड़ा करावै है । तीन दिनां हूं पिलंग विछाये सूती है । कना ही मींठो दळियो मांगै है अर कना ही सीरो करावै है। औ लै थारो घर, म्हैं तो धाई ! का आः रैसी अर का म्हैं रैस्यूं"। कैः परीर थळी सूं कढी ही। फतू मा री मदा चढ्यो अर बापड़ी कसट में पड़ी सुन्दर रै खेंचर दो मारचा उळाथ ! अर घींसर सांढरै खनै ल्यायो। मांड पलाणर पीरै नै ले चाल्यो ।

गुवार खादोड़ी जुवान सांढ, आसोज उतरतै रा ठंडा मीठा दिन, सिझ्या नै दोरा सोरा सुन्दर रा हाड पीरै जा पौंच्या । फतू मोथावरो भूखो, दिनूंगै पूठो मा कनै आप रै गांव आ वड़ियो। मा करिया फलका अर पापड़ां रो साग, जीम जूठर सुख री नींद मा बेटो सूत्या । मा पूछै है, बेटो बतावै है— कवै है, "मा वा तो बोली न चाली, मसांसैक आपरै पीरै पूगी । बींरो (सुन्दर रो) बाप ही पकड़र घर में लेग्यो हो । म्हारै वेगी मीठा चावळ, खीर फलका करचा, लुगायां गीत गाया । पण ! म्हैं तो जीमजूठ वेगोसो सरपट्यो ! कैवा हा, बाः तो आपरी मा सूं ही कोनी बोली; गुमसुम पड़ी ही" । मा बोली— "रांड आव करावै ही,

करै क्यां हूँ है" । एड़-छेड़ै मा बेटै रा मांचा है, वीचाळै न्योलियो, सूंडियो, दो वडोड़ा छोरा सागै सूत्या है । चारूंमेर गायां भैंस्यां बैठी है अर फतू री आँख्यां लिगती नींद चैंठी है। जाणै है काले गाय भैंस्यां नै कुण दूसी ? मा तो कदेही दूवै ही कोनी । मनै माथो मारणो पड़सी ! पन्दरै वरस परणे हुया, ऐः काम कदेही नही करिया । घणी सोखीनाई करी अर भायेलां में गप्पां मारी । खेत री लावणी आवो अर चाहे काळ पड़ो पण ! न्योलियै री मा ही काम करियो; अर घर रो आघो धिकायो । म्हैं तो नूंई मोचड़ी, दो पल्लां री धोती, कालरहाळी कमेज, सांकळी मुरकी पैरी अर धपाऊरी छैलाई करी । काल रै कामर कॉस फिकर रा धूप छाँवला उळझता जावै है । न्योलियै री मा कित्तो काम करती ही अर टाबर ही सांभती । वाः पीरै क्यूं गई ? मा सूं लड़ती नहीं तो अठै ही रैंती ।

फतू रो मूंढोर आंख जावक भींचीजग्या है । नाक सूं जोर रो सांस आवै जावै है अर जी मांयली वातां ही ऊजळी धोळी उघड़ती घूसर घालण लागै है । सुन्दर तो पीरै सूती है पण ! फतू नै काल रो काम विना करे सामो दीसै है । जाणै है न्योलियै री मा काम क्यूं करै नीं ? रीस आवै है, सदा दांईं ही झट सुन्दर नै ठोकणी सरु कर देवै है । एक, दो, तीन ! लातां री पड़ै है जद सुन्दर रोवण लाग ज्यावै है ।

दिनूंगै रो वखत, सपनै री नींद, फतू नै मेगवाळ रो हेलो,

"हां" रावत कियो— "जदही तो रातनै थारै साथै मनै रावै है"। "मनै कवै है 'रावत थूं माईतां बायरो टाबर है। जाम्योड़ै सूं वतो लागै है। क्यूं जगां जगां फिरतो फिरै ? अेकलो रैणै सूं म्हारै खनै रैणो चोखो है। म्हैं तनै पीस पो रोटियो कर देसूं अर सोवण उठण नै मांचो गूदड़ पड़ियो है। म्हारो ही जी लाग जासी अर मदै रै ही भाई हाळी जगां भरीज जासी"। "टिकर रैसी तो गुवाड़ी ही बंध जासी"।

जद ही तो घरे भाई रो थान वणा राख्यो है। रोजीनै म्हाधोर पाणी रो लोटो ढाळै है अर सीधै मांसूं दोनां वखतां पैलीपोत थोड़ो चाढै है। दोनूं हाथ जोड़ै, सिर टेकै अर कवै है— "बेटा धना ! थारै छोटै भाई री निगै राखी। इत्तो म्हारो कैणो ही मानी"। मदो आपरी मा री वात वतावै है"।

रावत अबार नूंवो ही मदै रै घरां रैवण आयोड़ो है। मदै रै मूंढै सूं रूपां रै रोजनै री वातां सुणी तो वडो दुखी हुयो। ऊंचै मिन्दर माथै रास देखतो ही ऊबक्यो ! मदै रै घर खानी झांक्यो। रूपां चांनणी रात में, आपरै घर में, गोतार गिरणी सी खांवती सामी फिरती दीखी। जद बोल्यो— "चाल मदा घरां चालां ! रूपां मासी अडीकै चिन्ता करै है"।

मदो वोल्यो— "चालो तो भलाहीं पण ! आजकळै माऊ घणी कांस कोनी करै। घर में वडोड़ा भाई रो थान है जकां माथै जी टिका राख्यो है। वाखळ हाळा सामलां सांडां रै घरां ही अेक पितर रो

नाडो है। धनै भाई रै साईनो ही एक जगराम हो। वोः सालेक पैल्या ही चलग्यो हो। दोनूं साथी ही पितर री जूणी में आग्या। धापी बामणी जकी वरस साठेकरी बूढी है; वीं रै मूंढै बोलै है! वाही आखा देखै है अर वाही हाजर नाजर रा परचा देवै है। जद ही मा रो थोड़ो जी जजम्यो है। अै वातां करता करता मदोर रावत घरां आया, मांचा बिछाया अर दोनूं वाखळ में सोग्या।

चार घरां रै विचाळै चौड़ी वाखळ; जकां में पांच च्यार मांचा रोजीनै रा ढळै। अेकै कानी रावत अर मदैरा ही मांचा बिछरिया है। जांतो पाळो, वार रो सोवणो, गाभा तो ओढणां ही पड़ै। पण, वाखळ में अेक पांवलो कुतियो मांचां माथै वैठण नै हिग्योड़ो है। रात नै आदमी आर सोवै जद वो बोलो बोलो चालै अर ऊपर चढ़र वैठ जावै। नींद लेवतै माणस री मसोवड़ में मूं देर न्याग्रो न्यायो मौज करै। रावत जाण्यो— "आज अेक लाठी सारै मेल लेऊं! जे कुतियो म्हारै ऊपर ही आ वैठे तो ठोकण नै काम आवै! कालै ही गंडक घेरण नै, नींना में कीं हाथ नीं आयो। कुतियो डांढो लिगतोर फीटो है। लठ्ठ पड़े बिना मरियो ही नीं मानै। आज थोड़ी जाग राखर तांवणो है"।

मदै नै आई जोर री नींद अर करिया ही आपरा सभाव सरु! अंगाडी मोड़ी, अर दांत पिस्या, आडो हुयो अर आपरा पग रावत हाळै मांचै माथै पसारिया। रावत सळपळाट सुण्यो, भार सूं दब्यो, तो घणो दापळियो। "कुतियो वैठग्यो! आज ईं री सागीड़ी

ब्याह हुवै तो आसण छोडै, जगां राखै। बीन बीनणी मदै रै घरां पैल पोत पित्तर रै नाडै आवै। बेटो जामै तो नांव रैतां ही पित्तर रो जागण लागै। देस दिसावर जावै तो नारेळ चढावै अर परदेसां सूं पाछा आवै तो उतरतां हीं नाडै धोक देवण दौड़ै। कोरै ही रोग दोख हुज्यावै तो धापी वेकारर कवै के पित्तर आछो कर देसी। धन पसु गुम जावै तो पित्तर रै आवो, चोराणै चल्यो जावै तो पित्तर नै पूछो अर चोरी हुवै तो जोत करावो। घाटै नफै वेगी ही आखा दिखाळै। बार बारला गांवां तांई पित्तरजी री संकळाई फैलगी। सागै सागै धापी रो नांवों ही आखा देखण हाळी भोपी तिथा पंडी रै रूप में फुरग्यो। दूर दूर रा मिनख गिरै गोचर पूछण वेगी आवै। धापी सिभया सिवर अर सोवै; दिनूंगै पूरो परचो देवै। पित्तर अर भोपी री भारी बडाई हुवै। नूंवां गाभा हूं धापी रै घरां खूंटी अर तणी टूटै है। वूढी डोकरी ओकड़ू चालै, हाथ में लाठी रै सारै सारो दिन गांव में मालै। कसबै रो गांव, हांतीर कोथळियां हूं लदी वगै। कीटी अर मगद हूं दबी वगै। कठै हूं बींटी, कठै हूँ खोपरा; कठै हूँ सैंधा; कठै हूं ओपरा; मोकळा ही माणस मुलक भर सूं पित्तरजी री जात आवै है। रावत मन में अचंभो करै है।

अेकरगी बात, रूपां रोही में रयी। काती रो मीणो, सिभया रो वखत, रूपां कान्चर छोलै अर सावढ रै तड़कै साग छमकै। सौ वीघां रो खेत मोठां हूं छलियो पड़ियो। किसाण वाणिया लावणी रो लावो ल्यै अर काम रो लोभ करै। मदोर रावत मोठ उपाड़र आथण डेरै

आवै है; आडोसी पाड़ोसी सिमया भेळा हुवै है। कोई आलणियो,कोई काचरां री कढी अर कोई दही तथा तड़क्योड़ी छाछ में न्याई रोटी चूर चूर खावै है। कोई लिट्टा मोरै, मतीरा खावै है अर काकड़िया छोलै है। वातां करता करता नींदर नैड़ा जावै है। मांचाळा मांचै सूता, डूंचाळा डूंचै माथै चढ्या! कैयां धोरै माथै आखरी करी अर कैई झूंपड़ी में गुड़िया। पण बूढी रूपां तो वेलां रै अळसीड़ै में ही गाभो नाखर सोवण लागगी। लोग बोल्या "रूपां मासी अठै कोई बिच्छू कांटो लड़ जासी। चौमासै में परड़ अर पैणां घणा है, माचै माथै सूवो"! रूपां नैं कियो। रूपां बोली-"म्हारै तो पितर रूखाळो है"। रावत सूं नीं रियो गयो — बोल्यो"पितर के आडा हाथ देवै है"? "हाथ कोनी देवै तो तनै इत्तो वडो कैण करियो हो"? रूपां नैं रीस आगी। बूढी डैण, हकड़ी खांती सी बोलै है; आंख्यां मींचै है अर गाळ काढती चिरड़ी भींचै है।

रूपां सदा सूं ही बुरी वाजै। घर हाळा ही नीं, वास हाळा ही सूं धाखी खावै। रूपां री गाळ घी री नाळ गिणै। "मरज्याणा नागड़खादा" विना तो कींनै ही नीं बोलै। पण! रूपां रै कियोड़ै री रीस कोई ही करै नही। ईं वेळा डेरै आयोड़ा आखा माणस रूपां री हिमायती में, हां में हां मिलावै है।रूपां रै सामो बोलग्यो जकै वेंगी रावत नैं सगळा ओळमो देवै है। सांगीड़ो दुगै है। पण! रावत डरणै हाळो मिनख नही है। बीरो के डटै, सांची सांची कै ही देवै है। के "थांरै पितर में तो धूड़ रा दाणा ही कोनी। पितर पितर कोरा तेनर करो हो"। रूपां बोली—"हे माराज

[१४]

सोनै री कलम

सामसिंघ जिसै स्याणै, सासी सिफाई रो इसतीफो आयोड़ो देखर दफतर रै आखा आदम्यां नै अचंभोर अफसोच हुयो । जकै रो नांव लेतां हीं कामदार, थाणैदार, मुंसी, किलारख सै फूल उठता अर सुपरडेंट साव आप ही भादर मिनखां में गिणता हा। बोः ही सामसिंघ आपरै घरां जारियो है अर इसो वेगो इसतीफो ही मंजूर कर लियो गयो है।

अठारै वरसां री पुराणी नौकरी में पैंसल लेवण रो थोड़ो ही समै जुड़नो घटै हो। पण! सामसिंघ नै वीचाळै ही क्यूं काढ दीनो? ईं रै वासतै ही पुलस दफतर रै सगळां लोगां नै, दफतर में रैवण हाळै सामसिंघ सूं हमदरदी हुई। सै आप आपरो काम छोडर भेळा हुया अर सुपरडेंट साव रै बँगलै माथै धरणो दीनो। साव वारै आया, लोगां नै वडी कड़ी निजर सूं खड़ा देख्या अर साथै मिलर आणै री दलील मांगी। जद अेकै सागै ही

सै बोल्या— "सामसिंघ नै राखो" । साब मुळकर पड़ उथळो दीनो— "पैली आगलै सामधणी नै तो पूछो" ।

जद पछै सगळा गारद री कोठड़ यां कानी गया । सामसिंघ रा जिगरी भायेला, छतूसिंघ अर मोखमसिंघ बींरी कोठड़ी में आगैं भळे बैठा लाध्या । सामसिंघ दूधहाळी रो हसाब चुकावै हो, भंगीनै गाभा देवै हो अर सागड़ेदी सिफायां रै खातर गोठरो सरजाम भेळो करावै हो । बारै भीड़ भड़ाकै रो रोळो सुण्यों जद कोठड़ी सूं कढ्यो । मुंसी गुमासतां रै भेळै में वड़ियो । सामसिंघ आंरैं आणै रो मुतळब तो जाणग्यो पण ! भळे ही पूछ लीनो "कांई वात है" ? हैड किलारखजी आगैं हूर बोल्या— "म्हे थांरै इसतीफो देर घरां जावण रो कारण जाणनो चांवां हाँ । पैंसन लियां विना घरां जाणै में ईं वखत थांरै घणो घाटो है । नौकर जिनड़ी रै कोभ्रो कुफायदो है । म्हे लोग इसी वात कोनी हुणै देवां । अबैं ही सगळा जायर सुपरडेंट साब सूं थांरो इसतीफो पाछो ल्यास्यां । थे साब रै कैणै सुणनै पर इसतीफो दियो है" ।

सामसिंघ अेकर तो डरियो पण ! पाछो वेगो ही बोलग्यो— "भाई लोगो थे जाणो ही हो के सुपरडेन्ट साब म्हारै वेगी किस्ता आछा है । वैः मनै के कैवा हा । मनै तो बियां पैंसल हूं ही अेक मोटी नौकरी दिराई है । म्हारो बुरो नीं भलो करियो है । थांरो हुकम म्हारै सिर माथै है । आप लोग सगळा जाओ,

लोभ लियां, हुकम सूं वगूं। मारग में म्हारो गांव कुसालपरो पड़ै, जकै वेगी हथूरा वाजरी घरां दे जावण सिर माथै उठा ल्यायो। जाण्यो बंद ओरड़ी में पड़ी खाटी हुज्यासी।

दोरो सोरो दिनंगैं नै भालगढ बड़े-यो, अमीरसिंघजी रै हीड़ै चाकरी में लाग्यो अर मीरणो बीं काम में ही वितायो। आठ पोर चौसठ घड़ी बांरै कनै ही रियो, पिलंग रो पागो ही छोड्यो नही। सिनान-सपाड़ो अर नाड़ो-भाड़ो ही वखत रै बळ नीं कर सक्यो। आखर अमीरसिंघजी थोड़ा टुरांखा हुया! जद राजी होपरार राजाजी खातां में म्हारो नांवों चढा दीनो। के— 'म्हारै संसार छोडणै रै बाद भालगढ रो हकदार राजा सामसिंघ है'। पण! मनै ठा नीं घाल्यो! बांरो रोग पूरो कळ्यो तो नीं हो; दूजै ओगण हुग्यो अर खाट झालली। अठीनै म्हारी छुट्टी खतम हुगी जद दो छोटै भायांनै कनै छोड़-या अर रातोरात छुट्टी वधावण वेगी भाज्यो अठै आयो। मनै अचंभोर दुख तो जद हुयो के आगै सुपरडेंट साव 'नो न्हार बारै चित्ता हुया लाधा'। पैलां सूं ही म्हारो इसतीफो लिखा मेल्यो हो। बोल्या— 'करदे ई रै ऊपर दसतखत; मनै थारो भाई कोई ओर लाधसी! सराही खीचड़ी दांतां लागी'।

म्हैं हक्को बक्को रैग्यो! गळगळो हुयो, हाथाजोड़ी करी अर पग पकड़े लीना। नोरा काढ्या, कियो— 'टाबर रुळ जासी, गरीब आदमी हूं। जिनगी खो नाखी। अबै असतीफो मती

दिरावो । एकरतो माईत पणो भळे करावो' । लीलड़ी काढी, गरीबी गाई अर तीन दिनां तांई थळी पर माथो रगड़्यो। पण ! साब नै दया नीं आईस नहीं आई । छेकड़े दसखत करणा ही पड़्या । असतीफो मंजूर हुयो । तिणखारो टको नहीं मिल्यो । कोठड़ी सामी पड़ी दीसी । वखत रै आटै रो ही इन्तजाम नीं हो । तीन दिनां रो भूखो, वादी में आयोड़ो गंडक सो उन्नै वुन्नै भूंवाळी खांतो फिरै हो । कोठड़ी में गयो । पण ! के करसूं ? जको ही ठा नहीं हो ।

हिन्दू मुसळमानां रो रोळो। पाकिस्थान वस्यो । मुसळमानां रा घर छूट्या, अंधेरो छायो ! राजा परजा रो खेत खूट्यो, मालक हाळी रो हेत टूट्यो, मेरी नौकरी ऊतरी जद सिम्झ्या कोठड़ी कानी चाल्यो जावै हो । पग पाछा पड़ै हा, कोठड़ी खावण नै आवै ही । वूढा मा बाप अर अबोध लुगाई ! टावरां रो सांसो सिर मेल्यां वगै हो । म्हारी पुराणी कोठड़ो नै मुड़दै म्हैंदरै सूं आरियो हो। पोळ में वड़ेतां ही, गवकैर कोठड़ी रै बारणै आगै एक घोड़ो लियां मिनख छाती में आग्यो । बीयैं मनै हाथ जोड़र खमा करी, रोळी रै छांटणा रो रुको दियो अर बोल्यो— "अन्नदाता ! थे आया हा जकैं दिन ही अमीरसिंघजी धाम पधारग्या । आज वांनै चार रोज हुया है। राजमाताजी थांनै बलाया है । राज गिदी रो हुकम हुयो है । वेगा पधारो अर राज संभाळो" ।

गांभां री सांजत आज सामै दीखै ही, जकै सूं म्हारो सेर पको लोही बळग्यो।

"सामसिंघ किंयां आयो"? सेठां कियो। रुको आगैं पटकतो थको म्हैं बोल्यो— "सेठां कँई मजा बापड़ी गरीबी रा ही चोखा है! कीसो ही खावो, कीसो ही पीयो, आप री नींद सोओ; आप री उठो। कोई कँवणियों सुणनियों कोनी! मनै तो ओ संतोसी अर साधू जीवण ही चोखो लागतो पण! भालगढ रै राजा अमीरसिंघजी रो सुरगवास हुग्यो अर बै म्हारै खोळै रो नांवों देग्या। अबैं भालगढ जावणो अर टीको करावणो पड़सी। जद थांरै खनै आवणो पड़ियो। जाणां लोगां नै कीं दे ले जावां। नीं तो हेली पेली कदेही ...."

"हैं! हैं! हैं! ऊंचा आवो, ऊंचा आवो" करता सेठ जेसराज जी होकै री नड़ी छोडर खड़ा हुग्या। बोल्या— "कोड़ां रो धन है, लाखां री मता है। भालगढ रो कोट, बीकपुरै रो डेरो, नैरां री मोकळी जमीन अर ठिकाणै रा घणा आछा गांव है। हां, कित्ता मंगाऊं? मुनीमजी! ओ मुनीमजी! तिजूरी में सूं राजाजी नै पांच हजार............"

म्हैं कियो— "पांचसौक घणा; लोगां रा हिसाब-किताब हुजासी"। सेठजी "हैं! हैं! हैं"! हँसता सा बोल्या— "पांच हजार तो लिरावो! अर राजाजी अेक म्हारी वात राखो सा! कद कद आवणै रो काम पड़ै है; आज भोजन अठै ही अरोगो।

है ! हैं ! हैं ! मुनीमजी पाँतियो लगावो तो ! म्हैं डरियो म्हारै गाभां सूं बोल्यो— "नहीं सेठां, भळै कदेही बात । आज म्हारै काम घणो है" ।

कियो— "रसोई त्यार है । मुनीमजी ! बाजोट अठै ही ले आवो" सेठ बोल्या ! हुकमरी ताळ ही, चाँदी रै थाळ में घेवर अर तेत्तीस तरकारी, बत्तीस भोजन री तेवड़ ल्या मेली ।

"म्हैं रातो रात गाभा कराया, धुवाया अर उसतरी कड़प फिराई । काळा बूंट खरीद्या । सुधियां ही तेल साबण लगार भूल्यो । दिनूंगै री रसोई ही सेठां रै घर सूं आई, जकी भळै जीम्यो ! अबै अेक बजे हाळी गाड़ी सूं भालगढ जासूं" ।

छतूसिंघ, मोखमसिंघ घणा राजी हुया अर बोल्या के— "जद तो थूं भाई घणो भागबळी है" ।

सामसिंघ कियो— "के बताऊं ? उंतावळ में हूँ ! जकै वास्तै थांनै ही फोड़ा घालसूं । थे दोनूं जणा मिलर गारद हाळां अर दफतर हाळां सगळां सिफायां भायांनै म्हारै नांवै री अेक मोटी गोठ कर देया । रिपिया चाहिजै जित्ता सेठां (जेसराज जी) सूं उठा लिया । पण ! मिठाई हाळां नै मिठाई, खीर हाळां नै खीर, मांस हाळां नै मांस अर दारू हाळां नै दारू

होइल्यो; क्षमा प्रदान करो"। पण! वैः नहीं मान्या। लाल पीळा हुया अर मनै पाछो खेत खानी घींसण नै लागग्या। म्हारै वडी भावगी वणगी! करूं तो के करूं? आछो माथो लाग्यो; पींडो छूटणो मुसकळ हुग्यो! जद जकां रै गोळै में ऊतरियोड़ो हो बांरो नांव लियो। भारमलजी रो भी कियो— के "भारमलजी गृह अभ्यागत होइल्यो"। पण! चासिया बेटी रा बाप नीं मान्या। वीसां रै बीचाळै घिरियोड़ो म्हैं कुतियै दांई पल्लो खींचै बूनै ही फुरूं अर दांतरी देऊं। थर थर कांपूं अर हड़मान चाळीसै तिथा वभूतैजी रै सिरलोकै रा नांवड़ा लेवणा चावूं। पण! अेक आखर ही जीभ पर नीं आवै। म्हारी हालत खेतरी सींव पर निसटणै सूं ही मिनख मारणियै कैदी री सी हुगी। म्हैं जाणू; देस कोनी नीं जणा "भेड रै खून में किस्या गांव ललाम हुवै"!

वूकिया भालेड़ो, 'नूतन आदमी होइल्यो' री बाणी रटूं, हाथ जोड़ूं अर चारांकानी भांकतो इग्यात मुक्ती दाता नै अडीकूं। णप! वठै बांधी कमेड़ी नै कुण छुडावै? भाए ही लामी सड़क सूं अेक वंगाली बामण, न्हायां धोयां सिर माथै टीका लगायां, हाथ में मिछळी लियां, खनलै खेत री सींव सूं म्हारै कानी ढळियो। बामण रै लामै लिलाड़ अर गंजै ताळवै सूं परियां चोटी री गांठ रो चूंखो चिलक्यो। जद म्हारो चित कीं: चेळकै हुयो। भोर रो वखत, भगत रो दरसण; म्हारो मूंढो परसण हूर थोड़ो मुळक्यो। जाएयो अबकै लारो छुटा देसी। माणस भी वडो पुखतो, जकां

रै माथै सूं तेज रा फुंवारिया सा चुवै हा। म्हारै कसाद कनै आयो अर हू हलड़ देखर बोल्यो— "की कोथा आछे" ?

वै सगळा 'खेत में मेला फिरिया' कैवण लाग्या जकां सूं पैल्या ही म्हैं बोलण लागग्यो— "आमी नूतन व्यक्ति होइल्यो; आमी मुक्त करावो"! चट म्हारै रोळै नैं गुण्यो अर आंख्यां लाल करी ही। म्हैं सामा हाथ जोड़िया अर दांत दिखाळिया। दयालु पंडित विंयां नैं कड़ी निजर सूं सभ्यता री सीख दीनी जकी ही थोड़ी थोड़ी म्हारी समझ में आई अर वैं म्हारै कानी हाथ री सेन करर कियो— "चोले जावो"।

म्हैंतो इसा लामा लांगड़ा दिया जको बडोड़ै सेठांळी दुकान आंवती ही दीसी। दुकान में चैळ-पैळ लाग रयी ही। कैई बुहारी काढा, कैई कपड़ो सजावा हा। कैई गिरायकां सूं माथो मारै हा अर कैई आळसी रसोई में रोळा करा हा। म्हैं सीधो लारनै गियो। बड़तां ही ठाकुरजी हेल्यो मार्यो। "माठरजी टूंटी नीचै हाथ धो आवो अर चाय पील्यो। मोड़ो वोळो कर दियो नीं? गैलो भूलग्या कै? ऊपर सूं आठ वजणै लागी है"।

"नहीं, घूमण चल्यो गयो हो; गैलो तो जातां ही सैंधो कर गियो हो" म्हैं कियो।

"टूंटी नीचै हाथ धोया, कोयलै सूं कुरळो कर्यो। पण! म्हारी धूजणी ऊतरी नीं! "मेला काहे फिरा" सब्द कानां में

[१६]

टूँटा टाँटी

म्हैं कळा दिनां री वात, म्हैं सरबतसर में राज रै कमठाणै माथै नौकरी किया करतो हो। बठै अेक घर ले राख्यो हो, जकै में टाबरां टीकरां नै सागै राखतो हो। घर फूटेड़ो सो बजार अर सेठां री हेल्यां रै बीचाळै पड़ै हो। म्हैं रोज कोस पकै उंफाळो चालर कमठाणै पर जांवतो, दिन भर काम करतो अर आथण सगळां सूं पछै काम छोडर घूमतो टैलतो घरां आया करतो हो। टाबरां री माँ रोटी मिरच त्यार राखती, जके खा पीर म्हैं म्हारै पांती आयोड़ी, सेठां सूं मांग्योड़ी मांचलड़ी साथै गळगोडा दे दिया करतो हो। ना सुखी, ना दुखी, जिनड़ी रा दिन आंगळयां रै विसवां माथै गिणर काटतो हो। म्हारो घर गांव में खाली पड़ियो फूटै हो अर बठै फूटेड़ै ढमढेर में साँफ विच्छू चूंटै हा। भाड़ो अर पाणी रा पीसिया तो कम तिणखा सारू ताव में सिर दूखण रो काम सारै हा। म्हारै गांव सूं अठै बदळी हुगी ही। जकी वात चेतै आतां ही म्हारी आंतड़ियां पाणी

बारी खेती सी हुज्याग्रा करती ही । म्हैं लोगां रो विसवासी, सूधो लड़ाकू अर मानी मुन्सी हो । ईं गांव में लोगां सरबजाण री पदवी दे राखी ही ।

पण ! घणा दिनां री वात है । उण दिनां म्हैं सगळी वातां नै नीं जाण्यां करतो हो । पुराणी रीत रिवाजां नै ही चोखी मान्या करतो हो । आः भावां नै म्हारै साथ्यां वणां दीना हा, जकै सूं म्हारा सागी विचार दब गिया हा । आज म्हैं सांचेलो मारग भूलावणियां वां: भायेलां नै डावै पग रा धूळिया दे चुक्यो हूं अर पोगा-पंथी रो, कड़ो सो दुसमण हूं । पण ! ईं वखत मनै आः वात ईंयां चेतै आई है के बीं रात, जकै आथण री म्हैं हमैं वात कैणी सरु करूं हूं; म्हैं बठै रै ओक नूंवैं सोखी रै घर सूं वातां करर पाछो म्हारै घरां आरियो हो । सोखी रो घर गांव रै परलै पासै पड़ै हो । मारग में कैई कुतड़ा भुसै हा, खादर खोळा पड़ै हा अर सेठां री तीनूं हेल्या रै बीचाळै कर आणो पड़ै हो । सांवळी सिंभ्या घरे पूगी ही ही; अर रात रो आधो पोर लारै वग्यो जावै हो । म्हैं म्हारै सोखी मितर रै घरां सूं टुरियो, जद माइक्रोफोन रै लाउडस्पीकर सूं घर कानी लुगायां रै कंठां रा गीत गाईजता सुणीज्या । कानां सूं ऊँचो सुणीजणै रै कारण म्हैं घर कानी घणां उंतावळा पग दीना । म्हैं गीतां रो घणो सोखीन हो । पण ! आज तो कान वैरी हुग्या । अंधारै में आखड़तो, लाठी सूं गंडकड़ा घेरतो सेठां री

रिपियां भरी री चीजां धूड़ रै भाव भोगै । सुख अर सासन रा ठाट ! हजूरी अर मौज रा मजा ! अमन-चैन अेक पग रै ताण ऊभा ! अठै देसरी हेल्यां मोटर-गाड़ी हाळी बाळदी चूंचावै । रेडियार रोसनी जाणो सेठां री कीरतीर गुणगान है । ऊँट, घोड़ा, रथ अर बैल्यां नै मारग वगता थुथकारो नाखै। गायां भैंस्यां मतंग हो रयी है । नोरां में कळचकी, कळ रा कूवा अर सिनेमा लगा राख्या है । बाजार में गोदाम बारै वाग-वगेचा अर कोठी बंगलां री कतार लागरयी है । रासत भर नै उधार तोलै है; आयोड़ां सूं मीठा बोलै है। चतराई अर आछा पणै में विदवां वाजै है । लारी वेटा पोता ही कुळ री मरियादा लियां वगै है । सारी वातां रामजी राजी है । आज री ईं गोधूळी वेळां आंरै वंस में दो टाबर परणीज रिया है । बडोड़ै सेठां री पोती केसर कुंवरी चंवरी चढ रयी है । जकैं री धमाळ जान डूंगरपरै सूं आयोड़ी है अर छोटियै सेठां रो कुंवर बाबू परताबसिंघ गंगापुर रै जगत सेठ घराणै में परणबा पधारिया है । वडोड़ा सेठ आयोड़ी जान री सरबरा, गांव रै अफसरां रै पांतियै अर ढुकाव री मैफिल री तजबीज वेगी अठै रिया है। बाकी रा छोटा भाई-बेटा आखा गंगापुर जान में मौज मजा करणै गयोड़ा है । चौथे दिन बीचोटिया सेठ अठै आसी; डूंगर परै वाळी जान नै सीख देसी । बडोड़ा सेठ जी गंगापुर जासी; आपरी जान नै सीख लेसी । इण

विध संपत सूं दोनूं विरध सिग्ग चढसी । रेल रै कारण वडोड़ा सेठ दोनूं ब्याह साज लेसी ।

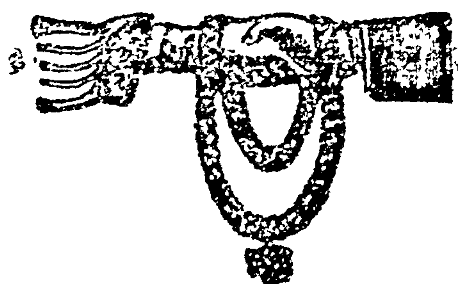
ढुकाव रै वखत वलायोड़ा आछा अफसर वडोड़ां सेठा री हेली ही अरोग्या अर वारली बैठकां में बेठा पान सिगरेट उडावै हा । सेठां रा मुनीम-गुमास्ता ईंयांनै इसा करड़ा जिमाया, जके घरां जावण वेगी सोसका तकै हा । कैई रेडियां री कूंची फेरै हा अर कैई मनस्या मुताबक बाजै माथै चूड़्यां चाढै हा । गींडवां रै सारै गिदरा नै न्हावै हा । चाय अर सिगरेटां रै धूंवै सागै सेठां री कीरत रा ही कुरळ ऊपड़ा हा । मंगता रा माथा अर जीमणियां रां जत्था री भीड़ लाग रयी ही । हेली आगै त्याग तिथा दापाळा घेरा घालै हा ! बींन बीनणी फेरां फुर मालै हा ! छोटियां सेठां री हेली रै माळियै परलै सामलै लाउडस्पीकर सूं राग आई— "अे भूवा" ? "क्यूं भतीज" ! "टको पइसो दे परोर म्हारो ब्याह कर देई, नीं जणा वडोड़ी सेठाणी नै लेर भाज जाऊंलो" पड़ उथळो— "वैतो मोटा घणा रे म्हारा लाल, वारी म्हांरा वावरिया" । आमनै-सामनै हेली, सीधी सुणीजै, कनलै नोरैं में जान रा जानी खिल खिलिजै ।

छोटियां री हेली कालै कुंवर बाबू परतापसिंघ जी बीन बणा हा, जद गांव भर में जीमण रो नूंतो दियो गयो हो । चढती जान नै खांड रै सीरै री आखै गांव नै वडार ही । कच्ची

लूंगाड़ा लुक्या बैठ्या मजा देवै हा। रावत ही क्याड़ां रै राह सूं हेली में झाक्यो तो गळो भरग्यो। पगां रै चाकी सी बंधगी। धूजणी छूटगी, हेलो नीं मारीज्यो। वतळावण री छाती ही नीं पड़ी। सागी पगां ही पाछो हो लियो। हेली में बीसूं लुगायां आपसरी में हथोथवी हुयोड़ी मेड़ी वोलै ही। एक लामी सी डिलाळ लुगाई नै मरदानो भेस वणार लखारो वणा राख्यो हो। लखारो सगळी लुगायां नै चूड़ी पैरावै हो अर सागै सागै चूंठिया चपाठिया ही भरै हो। आखी लुगायां आपरी लीला में मस्त ही। लाज सरम रो नांव नीं हो। बां: नै केठा बंद हेली री सगळी वातां लाउडस्पीकर सूं गांव रै बारै तांई जावै है। जकै सूं जानी हंस हंस जुड़ै, वडोड़ा सेठ कस कस कुढै। वै: तो आपरी मौज में ही घूमर घालती नाचै ही। कैई कवढी आंवती कोड करै ही, कैई हंसी में मन हरै ही। रावत रा माखर सैं तमासा देख आयो। पण! सेठां नै के कै:सी? जकी सोचतो वगै हो।

रावत जी रा में रीझ्या, जकी ताळ में सेठ जी सागोड़ा खीज्या। लाठी हाथ में लीनी अर आखड़ेता पड़ता भूखा ही छोटकी हेली कानी चाल पड़िया। मारग में दोनूं मिल्या; पण! हंस्यां न खिल्या। सेठ जी बोल्या— "गीत बंद कोनी करिया के"? रावत जी कियो— "सेठां! ओजूं

'टूंटा टांटी' करै है" । सेठ जी बळ भूजर खीरो हुग्या, चट छोटकी हेली जा पूग्या । चिड़न्या में भाठो पड़ग्यो । हेली में सरणाटो छाग्यो । म्हारै ही कानां नै सॉस आग्यो ।



री सोची। बैठतो जठै ही आपरी बडाई अर न्यात री वातां कैंतो। पाड़ोस्यां पर उपकार अर गांव माथै आपरा कियोड़ा गुणां रा गीत गांतो रैंतो। गांव भर में ब्याह, ओसर रो मोटो वखाण दैंतो फिरतो। ओसर माथै तो वडो जोर दिया करतो हो। भलां हीं कींरो माईत मरो अर भलांहीं कवळो काचो मरणो हुवो, ओसर तो अगडी करा ही लिया करतो। "कैंतो सौ धोती न अेक गोती! बिरादरी तो जीमावणी ही चाहिजै"।

लामू वडो दबंग आदमी वाजै हो। सारी वातां रा अड़धू लगा नाख्या। आयां गयां नै मीठी रोटी घालतो, गांव गांवतरै में चोखो खरच करतो अर बेली ढबी नै पूरी मदद दिया करतो हो। जिलै रा आंखा अफसर जाणता, तैसील रा सगळा सिरदार सामां हाथ जोड़ेता अर गांव हाळा सारो भरभंड लामू माथै ही नाखै राखता हा। चपड़ासी, सवार सूं लेर कलक्टर कमिसनर ताणी लामू रै घरं रा मैमाण वणता रैंता। लामू वटाऊ आयां नाचण लाग जांतो। सीरो, खीर पुड़ी, नोजा-पिसता अर किसमिस तिथा चार रकम रा साग आयोड़ां री तबियत बाग बाग कर दिया करतो। ऊपर सूं दूध चाय रा रबड़िया मन मोह लिया करता। सिगरेटां री पेटी अर बीड़ियां रा बंडळ तो आगै गिदरां पर गुड़कता रैंता। जकै कारण ही लामू रै घरां गायां भैंस्यां रा बाग ऊछरता। कोई ही गाय भैंस रुळी आई, चट लामू रै घरां दाखल हुई। ऊंट सांढ रुळतो आयो अर गवाळियै लामू नै संभळायो। लामू रो घर कचेड़ी

रा काम अर फाटक रा फ़रज अदा किया करतो हो।

लामू घराणै रो पूत, जकै सूं सागीड़ो मानीजग्यो। ओसथा ढळनै लागी, जद हकुमत जागी। वारलो गांव वडेरां रो नांव, लामू री चोखी चाली। लामू मनै-ग्यानै आपरै गांव में लाट साब वण्यो फिरतो। छटी हाळी रात जाणै वेमाता ईं रै कान में कै:गी ही के तेरै सिरसो स्याणो जगत में तनै ही वणायो है। लामू वात वात में गांव रा मिनखां नै 'अरे भोळा'! कै दिया करतो अर आपरी वात तीखी राखण खातर सांचा नै झूठा घाल दे'तो। छळ कपट करतो रै'तो पण! गांव रो हेतुलो वाजण वेगी मूंढो वळतो।

चुणाव रो मोको आयो, लामू खड़ो हुयो। वोटां वेगी घर घर लीलड़ी काढणी सरू करी। घरां आयां वात ही नीं करतो; वांरै घरां वीसूं गेड़ा दे'णा पळाया। भींट भावना छोडी अर हरिजनां सूं हेत घाल्यो। चुनाव आडा वीस दिन रिया जद गांव में च्यारां कानी जुंगळी होणै लागी। कठै ही पांच वैठा, कठै ही दस! कठै ही पन्द्रै वैठा, कठै ही पच्चीस! आवै जावै अर आपसरी में मिलता थका मिनख वतळावण करै —"वोटां हाळी कूंकर करणी?" "लामू गांवरो है अर दूसरा दूजै गांव रा"! जद केई सामो उथळो दे'ता अकूंणी रै नीचै हाथ लगावै, मुट्ठी भींचै है अर भूंवावता कवै— "लमकन्नियो वोट ओ लेसी"! अंगूठो ऊपर काढ़र मुट्ठी काठी करता कवै—"वोट वारै ही पड़्या है के!" अेक वोलै 'मारली मा मरी जद सीरो मण दस रो लगायो हो! म्हें कियो-लामू

कैई जुवान खंदा मिणनै राख्या गिया। बठै ही टाबर बठै ही दोफारो, जित्तो काम करणो चावै खोदे जावै। कैई कैई घर तो दस दस रिपिया रोज रा कमावण रो कढ काढियो! लामू रा गुण-गान गाईजै। आछा पणै री सरावण हुवै।

मजूरां रो हफतो चुकावण अफसर आयो अर लामू रै घरां उतरियो। लामू सूं वात-चींत करी। बरोबर बैठायो अर सगळां मजूरां नै पूरी मजूरी दिराई। लामू रिपियांळी पेवटी माथै गोडो आडो नाख्यां अफसर सूं वातां करै हो। मजूर अगूंठो, देंता जावै हा; अर पिसिया लेंता जावै हा। लामू वोट देंतो थको सागै सागै पूछतो वगो हो के "मजूरी पूरी मिलगी ? देनगी रो गोळ तो कोनी हैक"? लामू लोगां नै वडै प्रेम सूं वतळावै हो। बार बारलां गांवड़ां में चारां कानी जोड़ा खुदणा चालू है। अबै लामू जाणग्यो के— लोग म्हारा हुग्या। लामू सगळै कैवा दीनो के "चुनाव हाळै दिन काम छोडर वोट देवण नै आसीं जकां री मजूरी खोटी हुसी बा: म्हैं म्हारै घर सूं पैली देस्यूं"।

चुनाव हुयो। विरोधी हारग्यो। चुनाव खेत सूं घरां आंवता जीत्योड़ै लामू रै लारै हेड़ रो हेड़ आयो। कोई बधाई देवण नैं, कोई बधाई लेवण नै! कैई मोथाब रा भूखा देखाळो दिरावण भाज्या आया। कैई वातां करता हेली तांई सागै वग्या आया। घरां, हाळी वाळदी चाय री गिलासां लियां त्यार

ऊभा। नाई, भाट भोजन रा भाणा सजायां अडीका हा। पांत पड़ी, चम्मड़ पोसां पर चिलमियां चढ्या।

मम्बर मालक रीं जगां! लामू में लुळताईर उजळताई आई! अभमान जाग्यो। उम्मेदवारी रै मन लेणो देणो त्याग्यो। हाथ तंग हुयो; जिनड़ी रो जंग मच्यो। सैंकड़ां भाड़ा भटां में गिया! हजारां लेणै देणै में गिया। मैमानदारी अर खातरदारी तो घर नै काळ रै कोठळियै दांई खळेट कर दींनो। पैदा रा धंधा छूटग्या। गांव रा सारा काम माथै आ पड़िया। मामलां मुकदमै हाळा घेरा घाळण लागग्या। राड़ झगड़ै हाळा भूत जळोटिया सा जागग्या। लामू नै विचळा लीनो। दो आवै अर च्यार जावै। बोलतां बोलतां लामू रो माथो खपज्यावै है। कोई रकम रो, कोई खेत रो, कोई जमी रो, कोई घर रो; घणखरां घरां सूं लामू रै आगै झोड़ आपड़िया। उळझयोड़ा वाळ, ढीली धोती, होठां पर कठाई! वरस वीतग्यो पण! गांव रो काम लामू रै गतागुम में नीं आयो।

हेलीरी ऊपरी बैठक, लामू जीम परोर सूतो हो। घर मां सूं आज धान-चून अर मिठाण मिरचां रा कैई तकादा हा। लामू सोचै हो— "क्यांरा ल्यावां! आ नेतागिरी तो माड़ी नीवड़ी। घर रा सै काम वंद हुग्या। कनै रयी ना लाल पाई! लेण देण काठो हुग्यो। उधार पुधार ही मोकळा सिर कर लीना। मांगतो अेक न अेक रोजीना आ ही जावै है। वडोड़ां रो

ही पूणी मिली; कोंनै जावक ही मजूरी नीं मिली। लामू रै घरां रोवता लुगाई टाबरां री कतार लागगी। बापड़ी लामू रै घर हाळी पीरै रै पाण बैठी जकां माथै रंडकारी गाळियां री वोछाड़ ओसर पड़ी। धापेड़ी परदेस (लामू नै) तार दिरायो। के— "चुनाव दूजै हू रियो है, नहीं तो वेगा आवो" पण! वाणियै रो न्याव मुतळब सूं ही मीठो हुया करै। लामू तो लारो छुडार गयो हो। वाणियै री मूंछां तो ऊपर नीं नीचै ही सही! पंचायती पड़ो चूल्है में! लामू रो पाछो उथळो आयो — "म्हैं तो अठै दुकान कर लीनी"।

मजूरां री मजूरी रुळगी, झोड़ हाळां रा झमेला उळजग्या अर इस्कूल अस्पताळांळा कुसम्मै रै खेत दांई आस लियां ही रिया। गांव रा आखा काम, सदा कूटळो पड़ता अकूरड़ा री तरिया अधूरा ही रिया। लोगां वातां करी—"बापड़ो वाणियो तो हो ही! किसो रांघड़ थोड़ो ही हो, भूख रै विखै भाजग्यो! बठै भाई रै सारै दुकान मांडी है अर 'माटी री हांडी' चाढी है। काठ री तो अेकर ही चढै"!



[१८]

वाणीको वैर

अेक सुखलाल जी नांव रा भणीजात सेठ हा । जकां रै घरां अन्न-धन रा ढिगला अर बेटां पोतां रा टोळ सा ऊछरै हा । नाँव नामून अर दातारी रो जस चांद रैं चानणै दांई चोखळै में चमकै हो । अळगै अळगै तांई सेठ जी रै ठाट बाट री वातां हुया करती ही । दातारी रै सागै सेठ राम नेमी तिथा नित नेमी ही हा । रोजीनै भांभरकै भूल, मिंदर जाय नै माळा फेर पछै रोटी खाया करता हा ! मिंदर जाणो बांरो सूरजवत् हो ।

अेक दिन दिनूंगै सूणा हाथ में माळा लियां मिंदर री फिरणी फिरा हा । लारी लारी अेक बांरो वाळ–संगळियो बूढो जाट ही पिरकरमा देवै हो । जाट रै बूढै सान्त रस में जुवान हास्य जाग्यो । रिगरिगी आई अर सेठां सागै मुसकरी करणै री जी में करी । अेकलवाणै जूनो बचपण जाग्यो । जाटा काम तो सदा

खूसर हाथ में आग्या। बोलो बालो जीमण लागग्यो। मनवार रो काचो हो।

जीम्यां जूठ्यां पछै मांयनै सूं लप-लप अेळची नै लूंग आया। बारै सूं सेठ होको भराय पींवण नै आगै मेल्यो। चौधरी होकै री नै (नड़ी) मूंढै में ले नै खींची, वडो आणंद आयो। जाण्यो— "सुरग जाणै सूं आंगळ दोहेक दूर रियो हूं"। बोल्यो- "भाई जी म्हैं तो थांरै सूं लारैसैक मुसकरी कर लीनी ही। पछै पिछतायो ही घणो हो। पण ! थे तो आज मेरै बेई वडो फोड़ो देख्यो है"। सेठ जी मौकै सारू बोल्या— "थां जिस्यां सा पुरखां रै वासतै फोड़ो क्यांरो है भाई जी ! अमल तो मनवार री अमोलख चीज ही है ! वडेरां मिनखां री मनवार करणी म्हारो धरम है। वताओ फोड़ो है ? थे आज सूं रोजीनां भाख फाटे ही आज्याया करो। म्हैं बारली तिरबारी में सूतो लाध सूं। थांनै वेगोसोक मावो करा दिया कर सूं। ऊपर सूं आपां भाई भाई चाय अर होको चूंचायस्यां। थांरै घरां काम हाळा तो घणा ही है। जणै क्यूं कोनी अमल लिया करो ? अबै हथाई पर जोर राखो। घर सागै कोनी चालै। घर री मिमता छोडद्यो। सुधियां ही अठै अमल अर टूंगार करणै वेगी आज्याया करो"। जाट हंकारो दीनो। जाण्यो जबरी मौज लागी। आछो गूंगो किराड़ लाध्यो है।

जाट पीळै वादळ ही नाड़ो भाड़ो कर नै सेठां रै घरां रोजीनै

भाज्यो जावै, सेठ जी खड़को सुणतां ही, बोलणैं सूं पैल्यां ही चट उठै। अमल ल्यावै अर मनवारां मनवारां में घणो मतवाळो बणावै। ऊपर सूं चाय अर होको पावै। कदेही सिरावणी ही सागीड़ी करा देवै। मिसरी अेळची रो ठूंगार तो इकळंग आगैं ही पड़ियो रैवै। सफासाळ में पिलंग बिछाय देवै अर हुकम में हाजर रैवै। चौधरी जी सूता लैरां लेवै। सांतरी मौज लागी है। छः मीणा सूं अोही मोफत मदरसो लागै है। एक सौ अस्सी दिनां सूं अै ही मीठी मौतरा भाड़ा चालै है।

ईंयां करतां करतां सेठ जी चौधरी जी नै एक वखतरो अेक भरी खावण हाळो मोटो अमीर अमलदार बणा दीनो। मिसरी अेळची रो तो खरूंदो इसो हुयो है जाणो जांटी रो बैरी बूढो ऊंट हुवै। गवां गवां गटकावै है। अबै भाख फाटे सूं पैली ही चौधरी सेठां रै घरां इंयां भाज्यो आवै, जाणो सीक रै आटै माथै मरण नै भोळी भोळी मछली आवै। जाट के जाणै हो? के ईं मौज में ही म्हारी मौत है।

अेक रात सेठ जी सूता सूता सोच रिया हा के— "अबै चौधरी सागीड़ो सो अमलदार बणग्यो है। जे अमल लेवण नै थोड़ो सो मोड़ो हुज्यावै तो जाटका नाटका सा टूटण लाग ज्यावै। बिना अमल उबास्यां आवण लाग ज्यावै अर नासां आँख्यां में पाणी भीर हुवै। अबै इयै सूं वास्तो तोड़ लेणो चाहिजै। दूध री माखी दांई निचोय फैंकणो चाहिजै। लोग चेतैः राखै के वाणियैं

[१६]

फदड़ पंच

काळां री वात, किसाणी जात, निकमाळै री रुत अर धान नीं नीपज्यो जठै कतारां लादै। कुसमैं रै गांवां सूं जुवान ऊंटा माथै चढै अर काळां कोसां सूं धान री छाल्यां भर ल्यावै। रोळिया, हंसाळू, अळवळिया ऊंटां रा ओठी, गैलै में मीठी गप्पां रा गुळछर्रा उडांवता चारां कानी वगै। जांवता ऊंटां पर चढिया, कैई जणां घोड़ी माथै सिर दियां, निंदाळू झोकड़ी लेवै, आंख खारी करै। कैई रिझाळू गीत राग गावै अर ऊंटां नै टोरता थका टोळीरा सावचेत सिरदार वण्यां माथो ही नीं टेकै। आंवता आखा ऊंफाळा, हाथां में जूती लियां, ऊंटां रा पूंछ पकड़यां घर लेवै। मुरधर रा नर इयां कतार लादै।

फदड़ पंच कतारियो आपरै गांव रो ऊंचो हुयोड़ो रोळियो जाट हो। नांव धूंकळ हो। धूंकळ जानां, जपानां, मेळां-ढोळां जुवायां-भायां सागै आघूंतो भाड़ंती हो। जीमण नै

बैठतो जणां चावळ लापसी रा टांव खाली कर देतो अर ऊपर वीस वीस फलका खाय जाया करतो हो। मिसी बाजरी नै हाथ नीं मांडतो। कैतो—"मिसी धिसी नहीं आणद्यो बिसी री बिसी"। लुगायां नै हंसावंतो, टाबरां नै रमांवंतो अर बूढां रो मोकळो हीड़ो चाकरी करतो मोटो गांवतरो कढा ल्याया करतो हो। बींनै सगळा चांवता रैता। वो: मनरो मेळू, मूंढै रो सेळू, मुरड़ीजत्ती मूंछां रो फबतो दूधियो जुवान हो। कनैं ऊजळा गाभा, भींफरो टोड— अर घर री रकम, मतो करतो जणां हीं कतारियो बण जाया करतो। पण! मुतळब सूं दूर पारकी पीड़ बैठणियो, मा नै मा, भैण नै भैण कैवणियो, कुलछणौ जुवान कांधै माथै गुणी विरध माथाळो मुरजादो मिनख हो। बींरी कैयोड़ी 'लो' लीक' ही। गांवरा भरोसो राखता हा!

समै जोग री बात, खाली कतार गांव सूं चढी। सामै सोन चिड़ी उडी, डावै लूंकड़ी कढी अर जींवणौ विसधर वग्या। धूंकळ नाकरी सुर सोझी, आंगळ्यां रा विसवा गिण्या अर आप रै साथी कतारियां सूं बोल्यो— "के भाईड़ां सुगन सांतरा हुया है; पोवारा पच्चीस है। म्हैं आज सुवारै दो रोज थांरै सागै चालूं हूं। परसूं आगलै आण हाळै गांव में ठैरूंलां। वठै अेक ब्याह है। जकै में अेक जान जोर री आवैली; इसी सुणी ही। म्हैं वांरै सागै दिन तीन गफो

जाण्यो जानो के (धूंकळ बेई) सोळवीं सोनो है। जान्यां जाण्यो कोई घराणै रो भातवी सिरदार होसी। भातव्यां जाण्यो कोई वडै खरै सभाव रो ग्राम-पंच हुवैला। इण भांत धूंकळ री धाक सगळां माथै आछी जमगी। जणां धूंकळ जान रै डेरै जार कैवै है के— परसंग्यो थां लायक तो कोई चीज है नहीं पण! म्हांरी मोठां री मुट्ठी में कोई कसर हुवै तो वता दिया। कोई तकलीफ हुवै तो कै: दिया। सगो सगै री जड़ हुया करै है, कोई कुठाकरी नही हुणी चाहिजै। भांड विगाड़ो करणियां घणा है। तकड़ा रिया कीं री मजाल है के म्हारै हूंतां रै रै चैं चैं ही कर देवै।

सुख में दिन जांतां के वार लागै। आज वडै भात रो दिन आग्यो है, कालै दिनूंगै सातवैं भात सूं जान नै सीख दी जासी। धूंकळ विचाळै विचाळै फिर रियो है। मैंढाळा वडै भात रै सीधै रो सराजाम पूछै है। धूंकळ कैवै है— आज धान दस सेर वत्तो ही नाख्या, भातव्यां अर घर रा ही नूंता पांता लागैला। जानी कैंवता हा आज वडै भात नैं म्हांरा दस वीस नूंता वत्ता लागसी। दस सेर वत्तो ही चोखो। कोई चीज नीवड़ जावै जणा किसीक हंसी हुवै। ओछो हुवै जको ओछी वात करै। ब्याह-सावां रै मोकै आपरो बीनैं ही जाणनो जको पाछली वात पैल्यां कै: नाखै!

सीधो वतापरोर धूंकळ जान खै जावै है अर कैवै है-

के— वडै भात रो वैधो है, जान दिन विसूंजतां हीं जीमण नैं त्यार हुजाणी चाहिजै। मैंढाळां रा नूंता पांता घणा है। थे थां कानी सूं वेगा जीमल्यो तो कोई ओर काम सूझै"। जानी बोल्या— "थे सगळी वातां नै पैल्यां ही सोच लेवो हो। थांरै कारण देवतां रो सो व्याह हुरियो है, सुरग री सी सोभा छा रही है।

मूंधारो सो हुयो। जान जीमण नै आई। सागै सागै धूंकळ रा सिखायोड़ा साथी कतारिया ही आ बैठा। पण! कूण जाणै? वठै तो धूंकळ कैवै जियां ही हुवै। बोल्यो— "देवो सगळां नै थाळी अर करो पुरसणी सरु! 'मोट्यारां पग फुरती राखो' अेक दिन रो काम और है, पछैं जुग सो जीत लेस्यो"। हुकम री ताळ ही। सगळो काम सलटाईजग्यो। आखा जणां जीमण सूं तिरपत हुयोड़ा आप आपरी जगां जार सूग्या।

पगड़ो हुयो, तारा झड़्या अर कूकड़ो बोल्यो। जद सूरज निकळ्यां ही वीनणी री मा कूकणो सरु कर दियो। बोली— 'म्हारी बेटी रै गैणो जावक थोड़ो आयो है। गैणै रा रिपिया झळे लेसूं, जणा सीख देसूं। म्हे म्हांरो टापरो उजाड़ दीनो है, जकैं सारू गैणौ हुवणो चाहिजै"। धूंकळ जाण्यो अवकै भावगी वणगी! झट! झूल्यो, आछा गाभा धोया अर झालर आंगणै में आयो। बोल्यो— "लोग व्याह विगाड़नो चावै है।

[२०]

म्होरी

(काक-भाभली)

हँसण बोलण री मिनख-जमारै में वडी मौज है। मिनख-धणी नै पाळनै वेगी हंसी मजाक ही खटरस सीधो है। मिनख-मिनख रै सागै हुयो है जद सूं ही हँसी करणी ऊकली लागै है। आ: जकैं दिन सूं ही हरी भरी नित नूंई नीरोग रैंती आई है। देवर भुरजाई हंसै बोलै, जीजो-साळी हंसर संको खोलै अर मारू मरवण विना ओलै छानै मुळक मुळक मीठी किलोळां करै है।

हंसाळू मिनख री कोई ही रीस नीं करै। हंसी मजाक में वडै छोटै रो ही ग्यान नहीं रैवै। मजाकियै कजाक नौकर सूं मालक ही डरै, सेठ, मुनीम आगैं पाणी भरै अर मिनख मिनख सारू आछी-भूंडी मजाक हुंती ही रैवै है। वार-तिंवारां, मेळां-डोळां, हथायां अर आणा जाणां में गप्पां रो ही चाळो चालै है। जेठ

रै तावड़ियां में हाळी भतवारण हंसै, पो'री पंच-पोरी रात में कीलियो वारियै रंग रसै अर वैंता कतारिया काळ रै करड़ा दिनां खसै-वसै है।

मिनखा-जूण माथै विपतार कांस रा मोटा गिज है। बांरै आउखैर आरवळ ऊपर हंसी मजाक रा विरख ही छायां ओखद रुखाळी करै है। दोरा सोरा दिनां नै, राग दुहाग री वेळां नै अर मरणै-परणै रै मोकां नै हंसी ही पार घालै है। जगत में हंसी हूँ घणो कीं कोयनी! नानी-दादी अर पोथी पतड़ांळा हंसी री वातां में विलमावै है, खिलधारी खेल तमासै में खिलर्‍यां सूं खेलावै है अर सिनेमाळा नुकल मजाक तथा कोमिक री रोळ सूं रीझावै है।

आज रै वरतारै सारू म्हैं टाबर पणै सूं ही हंसी में हुस्यार हुग्यो हो। संगळिया कैई तो भागवानी रै कारण भणीजण नै बारै गिया, कैई धरमादाळै आटै रै ताण ही पिंडत वणनै खातर गांव छोड्यो। पण! म्हारै तो मदरसो टूट्यो जद सूं ही आड आगी। सीखण रो कोड हो जकै सूं जगाती थाणैदार कनै थोड़ी गप्पां लड़ाई अर दो आंकड़ा गुण्यां। गिरदावर पटवारी नै हंसाया अर चार हिसाब पकाया। सगा परसंग्यां सूं मुसखरी करी अर वुहार सीख्यो। म्हारै गांव में ना सभा ही, ना सोसाईटी; अठै तो हास्य हथायां रा ही पाठ चालै हा। जकै सूं भरोसो रियो के बारै भणीजणियां म्हारै सूं आगै

हंसी हंसी में हो कै नाखै— "राँडो कूटीजोली खोटी ! मूंजां रा बंध देर नाखीजोली । नही तो ओ काम छोड़द्यो । का मेरी चूड़ी पैरल्यो" ! सांची कैवै अर गांव में नागो लुच्चो नीं रैण देवै है। घुन्नै हूं घुन्नै मिनख नै हँसा नाखै अर म्हे दोनूं लाग ज्यावां जद तो कैणो ही के ? पूंगी पकड़ेल्यां तो सांप कढ आवै, नाचण लाग ज्यावां तो गांव भेळो हुज्यावै अर सिमया रो सांग ले आवां तो लोग दिनगै तांई भूखा तिसा ही हालै नहीं । म्हारी जोड़ी है। म्हारो मेळ है।

जुवान गाळै में काक-भाभली वडी मरदानी ओरत ही । सेर पक्को घी तो खड़ी ही पी जाया करती ही। मुक्को मारती तो ऊभै ऊँट नै उलाळ देंती । सगळै घर री वाड़ सिर पर खेई ल्यार छापती, लादा ढोंवती अर मोठां रा जूल ही सिर सूं नाख लिया करती । घर रो आखो काम हाफेही करती। पालो वाढणो, हळ वावणो, वूजा काढणा अर कूवो वावणो ओः सै काम काक-भाभली अेकली वडे जोर रा करती ! मोट्यार री गरज नीं करती । जे कोई अँवळो-सँवळो बोल लेंतो तो जान काढ देती । पाधरी मा भैण वतांवती । ईं सूं डरतां जुवानां रो जी जांवतो । होळी रै दिनां में कोई गैर खेलण वतळा लेंतो तो गैर रै मिस मार कोरड़ां री मांची में नाख देंती । स्यान खो देंती । नागां लुच्चां री तो वैरण पड़ी । डरता छेरा करता।

अेकसौ बोत्तर

काक-भाभली किया करै— "म्हैं भंडाण में जामी ही अर बठै ही इत्तो मोटो डील वाल्यो हो। बठै कोस कोस रै आंतरै सूं मोकळा ही गांव सामै दीखता रैवै है। म्हैं टाबरपणै में गांव रै गोरवै टोघड़िया चरावण नै जाया करती ही। ऊनलै बूनलै गाँवां में, जद कदेही कठै, ओसर ब्याह हुंतो; जणा ही म्हैं टोघड़िया राम रै डोरै घरे छिटकाय, पैर नूंई पोतड़ी, ले वाटकियोर देंती तड़ी जको जा बैठती पांत में अर कैंती— 'ल्यावो धान घालो'! जीम सीरोर आंती वाटकियो भर ल्याये करती ही। सक्कर घी सूंतती, सीरै रा लोधिया गिटती अर लापसी में तो कोरो घी ही पीये करती ही। बार बारलै गांवां रा तीजा ओसर, तपत भात अर वडार अेक नीं छोड्या। खनलै गाँवां रा पंच, नायां, पुरसगारां कारू कमीण सगळां सूं सैंधी हुगी ही। म्हनै देखता ही बै कैंता— 'छोरी मगली आगी; जीमावो रे भाई'! म्हैं कींनै ही काको, कींनै ही बाबो, भाई वीरो कर परार जीम हीं लेंती। भाग सूं कोई निःसूग ही मिल जांतो तो धाई काढ, ताळी वजा, गीत गा, गूंग खिंडा वाटकियो भरा ही लेंती। माईत म्हारै ईं काम सूं सदा ही दोरा हुंता। गाळ काढता अर ठोकता। म्हैं मार हूं डरती हाथ जोड़ती। जद कैंता— 'भळै मत जाई'! म्हैं कैंती— 'भलो'! पण! जीमण रो नाँव सुणती अर पग जूती नीं घालती। लुक-छिपर भाज ही जांती। परणाये-पताये

लखी अर पाछी फुरी ही ! देखै तो लारी म्हैं पीठ जोड़े, माड़ी सी छेती सूं ओकड़ू हुयो खड़ो हूँ । बोली— "राजा करण रै वखत ही थांनै तो 'म्होयी' करे विना को आवड़ै नीक ? म्हैं के थांरै साईनी हूं ; जको मिलूं जठै ही 'म्योयी'र गिलर ! टाबर थोड़ी हूं । भाभी तो थांरै भाई रै लारैं आगी जद हुगी" । म्हैं बोल्यो— "म्हैं तो थारी सीढी सूं ही कोनी टळूंलो" । बैण झट म्हारै बांध्योड़ै सिर पर पोटां रो कूंडो मेल दीनो अर बोली— "ल्यो तो घरां नाखर आवो" ।

कदे-कदे हंसी में ही फंस जाणो पड़ै है । म्हैं माईतां-थानक वूढी सारी नै के उत्तर देवै हो ? पुगावणो ही पड़ियो । हंसी रा औ ही मजा ! सदा काम करावो तो कदेही कींरो ही करो ही ।



ओकसौ छित्तर

म्होयी

राजनैतिक व साहित्यिक क्षेत्रों के

जाने माने प्रतिभा के पुत्रों के शब्दों में

डा० राजेन्द्र प्रसाद
(राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली)

श्री नानूराम की म्होयी नामक पुस्तक मिली, धन्यवाद !

राहुल साँकृत्यायन
(हार्न क्लिफ हैपीवेली, मंसूरी)

श्री नानूराम संस्कर्ता की कृति म्होयी मिली। कहानियाँ बड़ी रोचक हैं, और इसमें जन - जीवन का बड़ा सुन्दर चित्रण किया गया है। श्री संस्कर्ता ने म्होयी में सामाजिक रीति-रिवाज, रहन - सहन, विवाह - शादी के सामयिक - भाव भरे हैं। मुझे आशा है, आपकी सबल और यशस्वी लेखनी राजपूताने के मिटते हुए समाज के जीवन को चित्रित करके स्थायी रैकार्ड कायम करेगी। वास्तविकता के आधार पर ही कल्पना दौड़नी चाहिये, और ऐसे ही विषय को चुनना चाहिये जो अभी अछूता है। भाषा में जिस तरह आपने शुद्धता का ख्याल किया है, वह भी प्रशंसनीय है। सफलता के लिए बधाई।

मैथिलीशरण गुप्त
(चिरगांव, झांसी)

श्री नानूराम संस्कर्ता की राजस्थानी कृति पढ़ने को मिली। इसके लिए यही कह सकता हूँ कि रचना सुन्दर है और उसमें हार्दिकता है। सामाजिक चित्रण समय के अनुसार हुआ है। इसे भेजने के लिए कृतज्ञ हूँ।

डा० कन्हैयालाल सहल
एम. ए. पी. एच. डी.
हिन्दी संस्कृत विभाग, बिरला आर्ट्स कालेज, पिलानी

श्री नानूराम जी संस्कर्ता की ग्होयी पुस्तक मैंने पढ़ी। कहानी संग्रह की सूझ बड़ी सुन्दर है। कहानियां शिक्षाप्रद एवं समाज सुधार के लिए व्यंग भरी बहार है। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के कारण पुस्तक बड़ी रोचक बन गई है। लेखक का प्रयास पूर्ण सफल रहा है। मैं आशा करता हूँ कि राजस्थानी साहित्य की इससे श्री वृद्धि होगी।

विद्याधर शास्त्री M. A.
बीकानेर

श्री नानूराम जी एक ग्राम में बैठे हुए तपस्या के साथ साहित्य साधना कर रहे हैं यह अद्वितीय एवं अनुकरणीय है। आपकी जितनी कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं उन सबमें आपकी प्रतिभा और आपका राजस्थानी जीवन का गंभीर अध्ययन पद पद पर प्रकाशित हो रहा है।

ग्होयी की कहानियों में जीवन की विविध झांकियाँ है

और इसके प्रत्येक वाक्य में जीवन की एक झांकी है। मुझे अभी इसके पूर्ण अध्ययन का अवसर नहीं मिला। जो कुछ पढ़ा मैं उससे प्रभावित हुआ हूँ और मैं श्री नानूराम जी को बीकानेर के श्रेष्ठ साहित्यकारों में गणनीय समझता हूँ।

नरोत्तमदास स्वामी
एम. ए. विद्या महोदधि

राजस्थानी भाषा में वातां रो नवीन संग्रह 'म्होयी' देख अर घणो आनंद हुयो।

श्री नानूराम संस्कर्ता राजस्थानी रा समर्थ लेखक है। कळायण नांव रो आपरो ऋतुकाव्य राजस्थानी भाषारी घणी सुन्दर रचना है। कवि रै साथ साथ आप आछा गद्य लेखक भी है। प्रस्तुत पुस्तक में आपरी वातां रो संग्रह है।

इन वातां में राजस्थान रै ग्रामीण समाज और जीवन रो यथार्थवादी चित्रण है। समाज री सड़ी गली विकृतियां रा नानारंगी चित्र इन वातां में अंकित हुया है।

लेखक रो राजस्थानी भाषा पर अद्भुत अधिकार है। राजस्थानी भाषा रो सौन्दर्य पाठकां नै इन वातां में मिलसी। भाषा में आदि सूं अंत तांई मुहावरों री झड़ी सी लागियोड़ी है। लेखक कळाकार है और कळाकार री दृष्टि सूं आप भाषा री सजावट करी है।

छपाई री अशुद्धियां पुस्तक में जरूर अखरणवाळी चीज है पण आशा है पाठकां नै उण सूं घणी असुविधा नहीं हुसी और कलायण रै समान ही इण वातां नै पाठकां रो स्नेह प्राप्त हुसी। ●

विश्वेश्वरनाथ रेउ
महामहोपाध्याय

श्री नानूरामजी संस्कर्ता के लिखे "ग्होयी" नामक कहानी-संग्रह में २० कहानियां हैं। इनकी भाषा ठेठ राजस्थानी है और इनमें राजस्थानी-ग्राम्य जीवन का शाब्दिक चित्र अङ्कित किया गया है। चित्राङ्कन वास्तविक और सजीव है।

आशा है राजस्थान और राजस्थानी के प्रेमी इसका समुचित आदर कर इसके लेखक संस्कर्ताजी को ग्रामीण भाइयों को संस्कृत करने का अवसर प्रदान करेंगे तथा समाज की सेवा में सहायक होंगे। ●

